कान्यकुब्ज दर्पण ।

अर्थात्

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की वंशावली

जिसे

श्रीवाजपेई कन्दर्पनारायण लखनऊ वाले खाले के
पुराने कानपुर निवासी की
आज्ञानुसार
श्रीशुक्ल महादेवप्रसाद नभेल पुरैनिया वाले
फतूहाबादी भगवन्तपुर निवासी
विरचितायां

श्रीशुक्ल कालिकाप्रसाद नभेल पुरैनिया वाले
फतूहाबादी कानपुर निवासीने प्रगट किया ।

Calcutta,

PUBLISHED BY
KALKA PRASAD SHUKLA NABHEL
50, Sonaputty, Burra Bazar.

PRINTED BY BASHUDEB TRIPATEE,
"BHARATA MITRA" PRESS.
97, Muktaram Baboo's Street,
1898.

भूमिका ।

हमारे घरमें यह पुस्तक बहुत पुरानी धरी थी और इस पर सम्वत् १६९६ लिखा था इस लिए हमने अपने कान्यकुब्ज भाइयोंके उपकारार्थ इसे अति शुद्धकर सन् १८८५में छपवाईथी। और यह भी लिख दिया था कि फिर भी जो कोई भूलचूक रहगईहो या कोई आवश्यक बात मिलानी हो तो मेरे सज्जन भाइयों! हमको लिखो तो मै दूसरी छपवाई में पुस्तक में मिला दूंगा। सन १८९० तक मैंने रास्ता देखा और अन्तरवेद बैसवारा मे सब स्थानों बस्ते हैं। किसी कान्यकुब्ज भाईने आज तक कोई आवश्यक बात न उपस्थित की कि मुझको लिखैं। तब मै लाचार होकर अपने चाचा श्रीशुक्ल सूर्य्यप्रसाद तिनके पुत्र २ भाई महादेव जयदेव तिनको लिखा, तब भाई जयदेवने चारवर्ष में अति परिश्रम करके जो पुरानी पुस्तक में ऊंच नीच भूल थीं और आवश्यक निकाल कर सब शुद्ध कर दिया सन् १८९४में भाई जैदेव शुक्ल को देवलोक भया तब मै संशय किया तब भाई महादेव ने कहा की सन् १८८५ में जो तेरह वर्ष पर्य्यन्त वंशावली छपीथीं उन्मेंसे उलटा पुलटा काटकर कई छापेखानों में छपी हैं सोभी सब नुक्ही छांट सके क्यों कि उस पुस्तक में रजष्टरी कराई हुई थी और मैंने उन वंशावलियोंसे मिलाया तब किसी कान्यकुब्ज भाईयों का हाल ठीक ठीक नहीं मिला जैसा कि इस पुस्तक में ठीक ठीक मिलता है सो उन्होंने आज्ञा दी कि इस पुस्तक को छपवाय देवो तब मैंने पहिली वार १००० पुस्तक छपाई थी अबकी तेरह वर्ष पश्चात् २००० पुस्तक स० १८९८ में छपायदी हैं।

श्रीशुक्ल कालिकाप्रसाद मभेल
परैनियावाले।

शुद्धिपत्र ।

२ पृष्ठ ।

मैने छापेखानेमें पुस्तक छापने को दिया छापनें वालेसे भूल रहगई है जोभाई कान्यकुब्ज दर्पण पढ़े उनसे हमारी यह प्रार्थना है कि नीचे लिखे हुए शब्दोंकी तरफ ध्यानरखैं जिस्से [illegible] इसपुस्तक की भूल मालुम हो जो मैनें शुद्ध किया हैं।

अथ कान्यकुब्ज ब्राह्मण गोत्र षोड़स पश्चात्

चतुर्विंशति लिख्यते ।

जानना चाहिए ।

षटकुल ६ उत्तम दशमे १० पश्चादरि मध्यम

अष्टमे ८ निकिष्ट धाकर ॥

काश्यपसे	काश्यपी	भारद्वाजसे	भरद्वाज
एकावशिष्टसे	वशिष्ठ	कौशिकसे	विश्वामित्र
जमदग्निसे	कौण्डिल्य	भार्गवसे	कौशिल्य
गौतमसे	सौनक	वत्ससे	सावर्णी

शौनक गोत्र षोड़स ।

कात्ययनः काश्यपश्चैवा शांडिल्यो उपमन्यवः १ सांकृतश्च भरद्वाजो ॥ वशिष्ठश्च परासरौ २ गर्गश्च भार्गवश्चैवा ॥ वत्सोथ कौंडिल्यो तथा ३ गौतमश्च कौशिकश्चैवा ॥ भारद्वाजेति कश्यपः ४ ।

श्लोक गोत्र चतुर्विंशति ।

कश्यप: कात्यायन: काश्यपश्चैवा ॥ कौशिल्यो वत्सोथ गौतम: १ भार्गव: शांडिल्य वशिष्ठश्च ॥ सांकृत्यो कौंडिन्यो उपमन्यव: २ कौशिक: काव-स्थिक: भरद्वाजौ ॥ भारद्वाजौ सावर्णी परासरौ ३ विश्वामित्रेति गर्ग धनञ्जयानाम् । एकावशिष्ठ मौनस कौशिकानाम् ॥

अथ कान्यकुब्ज गोत्र एकविंशतिके शिखासूत्र आगे लिखा है ॥ अब तृतीय गोत्रका बांकी रह-गया था सो लिखते हैं ।

५ प्रष्ट ।

अथ त्रतीय गोत्रका प्रवर ।

वशिष्ठके प्रवर ३	बिश्वामित्रके प्रवर ३	भरद्वाजके प्रवर ३
इन्द्रप्रमद १	देवरात १	अंगिरा १
भारद्वसिति २	च्यवदल २	वृहस्पति २
वशिष्ठ ३	विश्वामित्र ३	भरद्वाज ३
माध्यंदिनी साषा	जजुर्वेद	जयुर्वेद
कात्यायन सूत्र	माध्यंदिनी साखा	माध्यंदिनीसाषा
पादप्रक्षालन दाहिन	कात्यायन सूत्र	कात्यायन सूत्र
शिखा दाहिन	पादप्रक्षालन दाहिन	पादप्रक्षालन दाहिन
देवता शिव	शिखा दाहिन	शिखा दाहिन
जजुर्वेद	देवता शिव	देवता शिव

अथ कान्यकुब्जस्य कर्मनिर्णयम्

कान्यकुब्ज ब्राह्मण को भोजन अवस्थान सम्बन्ध धर्म कर्म जो प्राचीन मर्य्यादा चली आती है उसी मुताबिक करना चाहिए।

पृष्ठा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	११	प्राकृत	साकृत्
३	१३	क्षरनत्य	क्षदस्नत्य
४	६	कौसिक	कौशिक्य
६	१४	कौसिक	कौशिक्य
७	१०	कश्मन	कश्चिन्
७	१०	यता	यात्य
८	२	विदद्नं	विद्वन्
८	४	दयावा	दयावान्
८	६	माच्युनम्	मायेनम्
८	७	क्षयो	तपो
८	१४	कुप्रातु	कुप्रांचु
१०	१५	मुरादाबाद	मुराद बाद
११	३	सिद्धि	शिद्ध
११	२०	वीरामद्र	वीरभद्र
१२	६	शिरमणि	शिरोमणि
१३	१३	नरूह पुर	नलहापुर
१३	१७	पद्मसे	जन्मसे
१५	१४	सन्तापी	सन्तोषी
१८	१६	यज्ञांमे	यज्ञान्तमें
१६	१	त्रिङ्गस	त्रिङ्गस
१६	१३	मद्दोनती	मनोहर्णी
१६	१८	लच्यगा	लक्षणा
२२	१	श्रष्ठ	श्रेष्ठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	४	गंग	गंग्
२१	८	गगो	गङ्गो
२४	६	लच्छिया	लच्छ्याम
२४	७	कवाए	कच्छाए
२४	१३	छरिलाम	छरीलाल
२६	२१	गम्भूभू	गवभू
२८	१	लुकाख्डपुर	लुकञपुर
२८	११	इटरी	इटरीं
३०	१६	बिटाली	बिटोली
३२	१८	दवी	देवी
३६	२	कक्वारी	वक्वारी
३६	१२	डखीवा	दुखीवा
३६	१२	मिहंडा	मिकुड़ा
४१	५	रभीवोतुसुजन-	रभवतुपुजन:
४५	१६	मिह्लिते	तेंढिते
४८	७	तनने	तिनने
५२	११	डोममपुरो	डोमनपुरके
५१	७	कंतुछाकि	फतूछाकी
५३	८	वातु छाकी	फतूछाकी
५५	५	गांडितै	पंडितैः
५५	७	नरेन्द्रै	नरेन्द्रैः
५५	६	रामार्णजी	राम थैंयो
५५	१०	[illegible]	हितदं
५६	२०	उछू	उछां
५७	१९	छोंको	होंईके
५७	१८	छरी	हरी
५७	२०	कान्ह	कान्हं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	२	बया	बावन
६०	१०	प्रसिद्ध है	प्रसिद्ध है
६०	२१	पुवा	पुरवा
६१	१२	वालेका	वाली २
६२	७	वालेईपुर	वाजपेईपुर
६६	७	वल्मीकका	वाल्मीककी
६६	१५	वेड़क	वड़े की
६८	२	रमाकांत	रमाकांत
६८	८	कान्हीवाम्	कान्हीवान
७०	६	ऊंच	ऊंचे
७०	६	मग्ना	मग्नी
७०	७	पत्र	पुत्र
७०	१९	मंगुल	मंगल
७२	८	वागीम	वागीम
७२	१६	वीरश्वर	वीरेश्वर
७२	२०	कोष्ठीदत्त	काष्ठीदत्त
७७	१२	भान	मान
७८	६	मगिनिकंठ	मनिकंठ
७८	१	८७	७८ प्रष्ठ
७८	७	मग्वाए	मर्वाए
,,	८	मणिकंठ	मणिकंठे
,,	११	लछरी	लछुरी
,	१२	५।२ ग्रामा दालन्त लो	५ चिन्ता १ ख्याल २
,,	१३	माधोराम ३	माधोराम १
,,	,,	रमन्त ४	रमन्त ३
,,	१६	वैतद्वारकी	वैद्वारके

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०	४	१२	६ वि०
८२	२	२	२० वि०
८८	३	५	३ वि०
८५	२		अथ भरद्वाजगोत्र का वर्णन
८६	१	शांडिल्य	कौशिल्य
६२	८	विंशाद्दा	विंशिया
६३	१	कौतम	कश्यपी
,,	८	वनाया	चलाना
६४	३	जाधवमो	आयवसो
६५	१	वेदक	वेदकी
,,	१७	शुल	शुक्ल
६६	७	भारद्वाजी	भरद्वाजी
,,	१५	उपमन्यु	कौंडिल्य
६५	१८-१	वाजवेद	वाजपेई
६६	३	पंचाद्दीर	धंचाध्नि
,,	१०	नरोनिष्ठी	गरेनिष्ठी
,,	११		वि० २
,,	१३	अरगलास	आगेलाकी
,,	१७-२०	शां ३	कौंशिल्य ३
६७	११	शिशौनी	शिमौनी
६७	१७	शां ७	कौशिल्य ७
१०४	१३	अस्थी	अवस्थी
६६	१६	शांडिल्य	कौशिल्य
१०८	१३	उचजाल	उज्जल
१०६	५	वाल	वासे
,,	६	देख	देखे
११०	१०	तेहित	तेहिते

पृष्ठा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११२	१८	भल	भाल
६३	१५	गुणा	गुणा
,,	,,	ज्या	ज्यो
१११	११	सुखेप्रणीय	सुखंप्रणीय
,,	१६	प्रोक्ता:	प्रोक्ता:
,,	१८	बली	बली
,,	१६	राया	राया
११२	१	नित्य	नित्य:
,,	३	अद्धां	मुद्धां
,,	,,	वत्वै	सत्वै
,,	,,	युक्ता	मुक्ता
,,	४	ि	वि
,,	५	चोयं च्यो	चोप
,,	,,	मार्गिकां	मनैकां
,,	६	रच्यत	रच्यते
,,	१०	प्रच्याप्य	प्रच्याय
,,	१३	श्रुत्वा	श्रुता
,,	१६	यातं	जातं

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ब्रह्मा ।

कान्यकुब्ज दर्पण ।

विप्रो वृक्षो मूलकं तस्य संध्यावेदाः शाखाधर्म्म कर्माणि पत्रं ॥ मूले नष्टे नैव शाखा न पत्रं तस्मान् मूलं यत्नतो रक्षणीयम् ॥ १ ॥ सारस्वताः कानकुब्जा गौड़मैथिल उत्कलाः पंचगौड़ समाख्याता विंध्या स्योत्तर वासिनः ॥ २ ॥ तैलंगाश्च महाराष्ट्रा द्राविड़ा गुर्जरा स्तथा । कारणाटक समाख्याता विंध्या दक्षिण वासिनः ॥ ३ ॥ पाठा-

न्तरे । मागधा मालवा यौधाः शाकाः संभाद्य मोचकाः । मागधा मथुरा तीराः शाकाः संभाद्य मोचकाः ॥ ४ ॥ पञ्च विप्रा न पूज्यन्ते बृहस्पति समायदि । यज्ञादौ नहि पूज्यन्ते स्थाने पूज्या भवन्तिवै ॥ ५ ॥ अथैषां मध्ये कान्य कुब्जस्य निर्णयँ व्याख्या स्यामः कुल नाम करो नास्ति कर्मणा जायते कुलम् ॥ ६ ॥ अथ ब्राह्मणागोत्र षोडश ॥ कश्यपःकाश्यपश्चैव गर्गो वत्सोथ गौतमः शांडिल्यश्च वशिष्टश्च धनं जय पराशरौ ॥ ७ ॥ भारद्वाज ॥ भरद्वाजौ कौडिन्य उपमन्यवः गोत्राश्च कान्यकुब्जानां षोडशैव बुधै स्मृताः ॥ ८ ॥ कवास्थिः कौशिकश्चैव मागधं माथुरं विना कुल नामस्मृतौ नास्ति कर्मणा जायते कुलम् ॥ ९ ॥

अथ प्रथमं षट्कुलव्याख्याकानि षट्कुलानि ।

काक ॥२॥ शांसा ॥४॥ उभा ॥६॥ स्मृतःपंश्चादरिः ॥०॥ कात्यायन ॥१॥ कश्यपौ ॥२॥ शांडिल्य ।३॥ सांकृत ॥४॥ उपमन्यु ॥५॥ भारद्वाज ॥६॥

अथ षोड़स गोत्राणि प्रवर लिख्यते।

कात्यायनके प्रवर ॥३॥	उपमन्युकि प्रवर ॥३॥
विश्वामित्र ॥१॥	वशिष्ट ॥१॥
कीलक ॥२॥	आभद्रं सुक ॥२॥
कात्यायन ॥३॥	इन्द्रप्रमद ॥३॥
देवताशिव इष्ट गार्गी	देवता शिव इष्ट दुर्गा।
भारद्वाजके प्रवर ॥३॥	काश्यपीके प्रवर ॥३॥
अंगिरा ॥१॥	असित ॥१॥
बृहस्पति ॥२॥	देवल ॥२॥
भारद्वाज ॥३॥	कश्यपी ॥३॥
देवताशिव इष्ट बूढ़े बाबू	देवता विष्णु इष्ट दुर्गा
शांडिल्यके प्रवर ॥३॥	सांकृत की प्रवर ॥ ३ ॥
असित ॥१॥	सांख्यायन ॥ १ ॥
देवल ॥२॥	कश्मल्य ॥ २ ॥
शांडिल्य ॥३॥	सांकृत ॥ ३ ॥
देवता विष्णु इष्ट दुर्गा	देवताशिव इष्ट दुर्गा
गौतमकी प्रवर ॥३॥	कश्यपकी प्रवर ॥ ५ ॥
अङ्गिरस्य ॥१॥	अवत्सार ॥ १ ॥
अयास्य ॥२॥	नैन्ध्रुव ॥ २ ॥
गौतम ॥३॥	लोहित ॥ ३ ॥
देवताशिव	भार्गेड़ी ॥ ४ ॥

कास्यप ॥ ५ ॥

देवता ब्रह्मा ।

कौशिक के प्रवर ॥ ३ ॥

बिश्वामित्र ॥ १ ॥

ऐन्द्र ॥ २ ॥

कौशिक ॥ ३ ॥

देवता शिव ।

भार्गव के प्रवर ॥ ५ ॥

च्यवन ॥ १ ॥

अत्यवान ॥ २ ॥

और्व ॥ ३ ॥

जमदग्नि ॥ ४ ॥

भार्गव ॥ ५ ॥

देवता विष्णु

वत्सके प्रवर ॥ ५ ॥

च्यवन ॥ १ ॥

अत्रवान ॥ २ ॥

और्व ॥ ३ ॥

जमदग्नि ॥ ४ ॥

वत्स ॥ ५ ॥

देवता विष्णु

शौनसके प्रवर ॥ ३ ॥

भार्गव ॥ १ ॥

वैतहव्यु ॥ २ ॥

साभावे ॥ ३ ॥

देवताशिव

कौशिक गोत्रके प्रवर ॥ ३ ॥

बिश्वामित्र ॥ १ ॥

देवराजे ॥ २ ॥

कौशिक ॥ ३ ॥

देवताशिव

एका बशिष्ठ प्रवर ॥ १ ॥

बशिष्ठ ॥ १ ॥

देवताशिव

पारासरके प्रवर ॥ ३ ॥

बशिष्ठ ॥ १ ॥

शक्ति ॥ २ ॥

पाराशर ॥ ३ ॥

देवताशिव

जमदग्निके प्रवर ॥ ५ ॥

भार्गव ॥ १ ॥

च्यवन ॥ २ ॥

अल्यवान	॥ ३ ॥	बिश्वामित्र	॥ १ ॥
और्व	॥ ४ ॥	मधुश्च्छन्दस	॥ २॥
जमदग्नि	॥ ५ ॥	धनंजय	॥ ३ ॥
देवताशिव		देवताबिष्णु	
गर्गगोत्रके प्रवर	॥ ५ ॥	कवस्थी गोत्रके प्रवर	॥३॥
अङ्गिरा	॥ १ ॥	विश्वामित्र	॥ १ ॥
बृहस्पति	॥ २ ॥	देवराजे	॥ २ ॥
भारद्वाज	॥ ३ ॥	कवस्थी	॥ ३ ॥
शौनकेति	॥ ४ ॥	देवताशिव	
गर्ग	॥ ५ ॥	सावर्णीके प्रवर	॥ ३ ॥
देवताशिव		पुलस्त्य	॥ १ ॥
कौण्डिन्यके प्रवर	॥ ३ ॥	पुहेति	॥ २ ॥
वशिष्ठ	॥ १ ॥	सावर्णी	॥ ३ ॥
मैत्रतिरुणे	॥ २ ॥	देवताशिव	
कौण्डिन्य	॥ ३ ॥	इति श्री एकविंशति प्रवरस्य सम्पूर्णम्। ॥२१॥	
देवताशिव			
धनंजयके प्रवर	॥ ३ ॥		

अथ कान्यकुब्जस्य एक विंशति गोत्रस्ये। शिखा सूत्र पाद प्रक्षालन चतुर्वेदस्ये व्याख्या लिख्यते॥

सामवेदसो १ कश्यपी शाण्डिल्य सामवेद गोभिल सूत्र शाखा कौथमी शिखावाम वामपाद प्रक्षालन इन दोनों का एकही है।	यजुर्वेदसा २ कात्यायन भारद्वाज सांकृत उपमन्यु यजुर्वेद शाखा मध्यन्दिनी सूत्र कात्यायन शिखादक्षिन पाद प्रक्षालन दक्षिण इन चारों का एकही है
ऋग्वेदसा ३ शाखाकाल सूत्र अश्वलायन शिखा दक्षिण पाद प्रक्षालन दक्षिण है	अथर्ववेदसो ४ शाखा शौनकी सूत्र बौधायन शिखा दक्षिण पाद प्रक्षालन दक्षिण है
सामवेद १ कश्यप भार्गव जमदग्नि वत्स धनञ्जय कौशिक कौण्डिन्य कवस्थी इनका सामवेद शाखा कौथुमीय सूत्र गोभिल शिखावाम पाद प्रक्षालन ॥ वाम है ॥	यजुर्वेद २ गौतम कौशिक एका वशिष्ट पारासार सावर्णि गर्ग भौनस इनका यजुर्वेद शाखा माध्यन्दिनी सूत्र कात्यायन शिखा दक्षिण पाद प्राक्षालन ॥ दक्षिण है ॥

कस्यपीगोत्रमें शाण्डिल्य कैसेभए सम गोत्र विवाह नहीं होता है ॥ १ ॥ गौतमाचार्य्य गोत्र में विवाह अपने घर सम गोत्र में करते है ॥ २ ॥ उपमन्यु गोत्र वा एका वशिष्ट गोत्रका समगोत्र है इनका सम्बन्ध नहीं होता है ॥ २ ॥ काश्यप गोत्र सा पञ्च प्रवरसा गोत्रमें काश्यपी वा शांडिल्य कैसे भए इनकी लड़का वा लड़की का सम्बन्ध होता है ४ समुझलेना।

कातयायन गोत्रका हाल वर्णन करते हैं।

कस्मि श्रोति न फलति सदायतद्धश्चो पकारो गुप्त प्रोक्तं अच नरिपत्तं तिष्ठति ज्ञान मर्मम्।

कस्मिन मिचे प्रचलति सुखं याति कौलं नधर्म्मं बिद्दनसूत्र वद मुनि कृतं वान जाने न जाने १

तत्र ब्राह्मण लक्षणम् । षट्जु स्तपस्वी संतोषी क्षमा सत्य समन्वितः जितेन्द्रियोदा दशोलोद याता ब्राह्मण स्मृतः ॥ २ ॥

आचारो बिनयो विद्या प्रतिष्ठा शौच माम्रृ-मम् श्रद्धा वृत्त स्तयो दानं दसधा कुल लक्षणम् । ॥ ३ ॥ अथ नारायण की नाभिसे ब्रह्मा भए तिन के पुत्र अत्रिभए तिनके पुत्र चन्द्रमा भए तिनके पुत्र बुधभए तिनके पुत्र ऐल तिनके बंशमें भीम तिनके पुत्र काचन तिनके पुत्र होत तिनके पुत्र जह्नु तिनके पुत्र कुति । के पुत्र बलाक तिनके पुत्र अजक तिन केपुत्र कुश तिनके पुत्र ४ कुशांबु १ मूर्तय २ बसु ३ कुशनाभ ४ कुशाबु के पुत्र गाधि तिनके पुत्र विश्वामित्र बिश्वामित्र तपसे ब्राम्हण भए तिनके पुत्र २ देवरात १ कात्यायन २ कात्यायन के वंशमें एक कांथित पुत्र भयादो वेदको पढ़नेसे द्विवेदी संज्ञापाई जिसे अब दुबे कहते हैं कांथित के पुत्र चतुर्भुज भए चतुर्भुज डांकासे परदेशमें बचे और एक पुत्र बधू स्त्री गर्भिणी बची तिनसे पुत्र गार्गी दत्त ॥ भए ॥ टिकरियामें बसे तब कांजमें

जाइके कांजके राजारी शिवापढ़ी राजासि मिश्र पदवी पाई और जो टिकारियामें रहे से दुबे कहाए गागीं इनकी स्त्री २ पहिली स्त्री से पुत्र ४, वहे १ मीटे २ ऐड़े ३ गैंडे ४ ॥ दूसरी स्त्री से पुत्र २ भए शिवता १ गोविन्द २ कांजके मिश्र कहाए वहेके पुत्र ३, पवननाथ १ लोकनाथ २ विश्वनाथ ३ पवननाथके पुत्र ३, मणिनाथ १ मधुसूदननाथ २ गोपीनाथ ३ वैजेगांवके भए मधुसूदननाथके पुत्र १ नरसिंहनाथ... गोपीनाथके पुत्र १ रामनाथ लोकनाथके पुत्र ४ काशीनाथ १ विश्वनाथ २ रविनाथ३ गोकुलनाथ ४ वड़ सब गजहरी के मिश्र कहाये काशीनाथ विश्वनाथ के गजहरी से पड़री में जाय बसे, मणिनाथके पुत्र भावनाथ वैजेगांवसे वहोनी सरांय में जाय बसे अरु नरसिंहनाथ छड़हा में जाय बसे अरु रामनाथ पारी में जाय बसे अरु लोकनाथ की दूसरी स्त्री के पुत्र मधुनाथ पासी खेरे में जाय बसे ते पासी खेरे के मिश्र कहाए ॥

मीटेके पुत्र २ अनन्तराम १ चिन्तामणी २ अनन्तराम के अग्निहोत्री भए चिन्तामणी के पुत्र ३ रामनाथ १ केशो २ अनिरुद्ध ३ ॥ रामनाथ के पुत्र ४ गोकुल १ कमल२ प्रजापति३ नान्हे ४

ओझन प्रजापति नाम्ने आंखिन में रहे तेहिते
आंखिन के मिश्र कहाए ॥ ओझन रहे मुरादा-
बाद में तिनके पुत्र३ प्रेमनाथ १ रघुनाथ २ भूप-
नाथ ३ तेहिमा रघुनाथ शुकनाथ ओझन के नाम
से मुरादाबाद में प्रसिद्ध हैं प्रेमनाथ के पुत्र ५ हैं
पचघरा के नाम से मुरादाबाद ही में प्रसिद्ध हैं।
कन्हैया के पुत्र ४ बिहारी १ दयाल २ बालीराम ३
बोरेश्वर ४ आंखिन के मेवाड़ामें जाय रहे ॥ प्रजा-
पति के पुत्र आंखिन ओसर रहे ते आंखिन के
मिश्र कहाए। कमल ॥ आंखिन के नाहों गांव
रहे तिहि तें आंझ गांव के मिश्र कहाए। कमल
के पुत्र ४ हीरामणि १ जागेश्वर २ [illegible] ३ साधो
४ हीरामणि आंझगांव से निकसिके मुरादाबाद
जायके तिनके पुत्र ३ बखता १ मथा २ बुलाकी ३
बखता के पुत्र मुड़कैया नाम से मुरादाबाद में
प्रसिद्ध हैं मथा के पुत्र हीरामणि के नाम से
मुरादाबादमें प्रसिद्ध हैं बुलाकी के पुत्र ३ छाया १
पल्टू २ सन्तोषी ३, छाया के पुत्र हीरामणि के नाम
से मुरादाबाद में ही प्रसिद्ध हैं पल्टू के पुत्र २
लखीधर १ चतुर्भुज २ ये मुरादाबाद ही में बसत
हैं सन्तोषी के पुत्र १ गोविन्द तिनके पुत्र ५

कन्हैयालाल १ लालमणि २ नंदीलाल ३ बीरबल
४ सूर्यप्रसाद ५। जगेश्वर बाजगांव से निकसि
के अगवना नगर जाय बसे तिनके पुत्र ३ सिद्धि १
बद्री २ देवमणि ३ सिद्धी के पुत्र ५ गंगाधर १
नंदलाल २ हीरानाथ ३ रामसुख ४ कुन्दमणि ५
गंगाधर के पुत्र लालमणि तिनके पुत्र बाजीलाल
नन्दलाल के पुत्र देवीदयाल तिनके पुत्र रामबल
कुन्दमणिके वंश में शिवानन्द नामीभए देवमणि
के अपने नाम ही से प्रसिद्ध हैं और बद्री के पुत्र
भी अपने नाम हीसे प्रसिद्ध हैं॥ आगे मिश्र नाथ
गांव से लाखोरी आयबसे तिन्हें लाखोरी के
नाम से प्रसिद्ध हैं॥ आगे के पुत्र २ बेनी १
पराशर २ आखोरिया कहाए बेनीके पुत्र २
हरीराम १ माधोराम २ हुये॥ सोंठियांके
मिश्र कहाए। हरीरामके पुत्र ४ मनी १ गोव-
र्धन २ शालग्राम ३ मदन ४ माधोरामके
पुत्र ५ पहिली स्त्री से पुत्र ३ कुन्दमणि १
टीकाराम २ भावनाथ ३ दूसरी स्त्री से पुत्र
२ राजाराम १ सीताराम २ भावनाथ के सुठियांसे
नौगांव में आयबसे॥ अनिरुद्ध लाखौरसे आयबसे
तिनकी स्त्री २ पहिली स्त्रीके पुत्र ४ हंसराज १

शंकर २ शिरोमणि ३ रुद्रासुख ४ हंसराज ये पुत्र कन्नौज गोकर्णदास से निकसि के असनी जाय बसे असनी में प्रसिद्ध हैं ॥ शंकर के पुत्र २ तारा १ बसे २ कन्नौज गोकर्णदास में बसते हैं रुद्रासुख के पुत्र कन्नौज गोकर्णदासजी में बसते हैं कन्नौज के नाम से प्रसिद्ध हैं शिरमणि के पुत्र कन्नौज से निकसि के शाहाबाद में जायबसे शाहाबाद ही के नाम से प्रसिद्ध हैं ॥ गणिनाथ की दूसरी स्त्री से पुत्र १ गङ्गाप्रसाद गोकर्णदास से निकसि के कन्नौज बसे कन्नौज के प्रसिद्ध हैं गंगाप्रसाद के स्त्री २ पहिली स्त्री से पुत्र २ तुलसी १ धनी २ दूसरी स्त्रीसे पुत्र ४ सतीदास १ श्रीधर २ घनश्याम ३ बला ४ तुलसी धनी सतीदास ये कन्नौज के शिष्यभये श्रीधरके पुत्र २ रामस १ ओम २ आपन के दिक्षाजी के शिष्य भए ओम के गोपालजी के शिष्य भए घनश्याम और बला ये बोधीपुर के शिष्य कहाए ॥ इन्हें के पुत्र ६ मोहन १ काशीनाथ २ जगन्नाथ ३ विश्वनाथ ४ पीथा ५ सदानन्द ६ मोहन के पुत्र ३ वेदमूर्ति १ कमलनयन २ रामधाता ३ ये बदरका के शिष्य श्रेष्ठ हैं काशीनाथ विश्वनाथ जगन्नाथ ये बदरका के शिष्य भये स-

गांव है पीपा के पुत्र मथुरा में जायबसे ते मथुरा के मिश्र कहाए महाशर्मा के पुत्र से दोमेद लखानी में बसे ते लखानी के भए बांकी में बसे ते बांका के कहाए ॥

गेंदू के पुत्र ६ मनी १ गनी २ सन्तोषी ३ वंशी ४ मगई ५ रघुनाथ ६ मनी के पुत्र ४ मानु १ केशी २ मुरली ३ रूपन ४, मानु केशी जगदीशपुर बसे जगदीशपुर के कहाए मुरली और रोपन बांकी में बसे ते बांकी के मिश्र कहाए वंशी सरवन के मिश्र कहाए सन्तोषी सेंथुवा के मिश्र कहाए मगई पखौंजा में बसे पक दुबिह पढ़ने से दुबे कहाए रघुनाथ सिरकिया बसे ते सिरकिया के मिश्र कहाये गनी नरहापुर में बसे ते नरहापुर के मिश्र कहाये। बांकी के मिश्रों ने अग्निहोत्र जायबदरका में किया सो बदरका के अग्निहोत्र कहाये। तफसील ४ राजापुर के १ सिंहगांव के २ बदरका के ३ मलिकपुर के ४ पचरी सब अग्निहोत्री भये।

कात्यायन गोत्रमिश्रका आसामी स्थानविस्वा लिख्यते

आसामी	स्थान	बिस्वा
पवननाथके	देवीगांव	१५
लोकनाथ	पासी खेरे	१५
शिवनाथ	गलहथी	१०
रामनाथके मोहन	ग्रा० मुरादाबादके	२०
रामनाथके कमल	कांभगांव	२०
कमलके पांचो	ना० से आबोरीवके	२०
रामनाथके प्रजापति	आंधिआ भीतर	१९
रामनाथके कल्ले	ग्रा० बेवाहामे बके	१८
हरीराम माधीराम	कुठियांये	१९
हरीरामके भवन	सी० रो नीगांव	१७
अनिरुद्धके कलीकसे	गोजसेदान	२०
अनिरुद्धके गङ्गाप्रसाद	कन्नौज	१८
गङ्गाप्रसादके सती दास	कन्नौज	१५
मोहनं	गोपामऊ	१०
मोहनके श्रेष्ट	वदरका	१५
कमल गोल	पिहानी	१०
पनाबला	बीघीपुर	१०

पीथाको पुत्र	कदालीगं वशे	१०
मथाथर्मको पुत्र	वरना	१०
मनी रघुनाथ	मिरकिणा	१०
मागकेशी	जगदीशपुर	१०
दिवसा गोविन्द	कांज	१०
मुरली रोपन	बांकी	१०
वंगी	सरवनको	१०
सन्तोषी	मेथुवा	१०
धावेको छिमेपराथर	मा०से काशीगी	२०
छोरामखि मथाछपा	मा० मुरादाबाद	२०
पल्टूको उमीश्वर		
चतुर्भुज	मां०से मुरादाबाद	२०
मगकाको सुडफेकाग	मा०से मुरादाबाद	२०
सन्तोषीको गोविन्द	मा०से मुरादाबाद	२०
जागेश्वरको सिवी	मा०से भगवन्नगर	२०
देवमणि	श्रेष्ठ	
जागेश्वरको पल्ली	मा०से भगवन्नगर	२०
	समान	२०

कात्यायनी गोत्र दुबेका आसामी स्थान बिश्वा लिख्यते।

आसामी	स्थान	बिश्वा
चतुर्भुजके दुबे	टिकारिया	७
नगईके दुबे	पत्योंजा	७

कात्यायनी गोत्र अग्निहोत्रियोंका आसामी स्थान बिश्वा लिख्यते।

असामी	स्थान	बिश्वा
बांकीके	बद्रकाके	५
अनन्तरामके	राजापुरके	१०
अनन्तरामके	बिहगांवके	१०
अनन्तरामके	बद्रकाके	५
अनन्तरामके	सतिकरके	२

इति कात्यायन गोत्रेति प्रवराः॥

श्रीकाश्यप मुनी ।

काश्यपी गोत्र का हाल वर्णन करते हैं ।

प्रथम ब्रह्मा । ब्रह्माका वंश मरीच तिनकै कश्यप तिनकै अवरराय तिनकै नम तिनकै द्विजिह्व तिनकै देवल तिनकै शमन तिनकै कांत तिनकै ब्रह्मण्य तिनके वंशमें आसादत्त भए, ते काश्मीर अद्वेत बसे पञ्जाबमें आये तिनके कल्याण भये पञ्जाबमें रहतेतब वहांके राजाने उनको रक्खा कुछ दिन व्यतीत होने पर कल्याणको गङ्गा सेवन को इच्छा भई वहांसे कन्नौजमें आये, कन्नौज के राजासे प्रतिष्ठा पाई और वहांही रहे, उनके २ स्त्री

एकका नाम शिवा दूसरीका नाम भवा, शिवाके ५ पुत्र राम १ गङ्गी २ कान्त ३ मान ४ समन ५। भवाके पुत्र ६ गैनी १ चैनी २ सुखई ३ मारवन ४ अटलू ५ बटलू ६ सब विद्यावान् भए, एक समय शिवराजपुरके राजाने यज्ञ किया तब कल्याणको कन्नोजसे बुलाया दूसरी गढ़ी ईशानमें थी उसमें निवास दिया, राजाने कल्याणको यज्ञाधिकारी किया, तब दून अपने पुत्रगण सहित यज्ञ विधिपूर्वक कराया तब दक्षिणा लेनेके समय कल्याणने कहा हमारे ११ पुत्र हैं इससे हमको ११ नगर दीजिये हमारे पुत्र उनमेंबसे हम गङ्गासेवन करेंगे, तब राजाने सन्तुष्ट होकर ११ नगर दिये, सुराजपुर १ सेवली २ सखरेज ३ मनोह ४ गौरी ५ बरुवा ६ उमरी ७ गूदरपुर ८ हरिवशपुर ९ पचौर १० चिङ्गसपुर ११ में सबका अमल हो गया, तब चिङ्गसपुर के एक पण्डित परमानन्द शिवराजपुर यज्ञमें गये राजाको आशीर्वाद दिया विदा होनेके समयमें दक्षिणा नहीं लिया कहा कि चिङ्गसपुर दीजिये, तब राजाने कहा कि दूसरा गांव लीजिये चिङ्गसपुर कल्याणको दे दिया है, परमानन्दने नहींमाना तब राजाने आधा करके दोनोंको दे दिया इससे

श्रङ्गसपुरी तेवारी आधा घर कहते हैं भलमन्सो सब भाइयों को समान हैं। साढ़े दस ग्रामका वेउ-रा जानो।

अथ प्रथम मनोहका वेउरा।

राम बसे मनोहमें तिनके पुत्र ४ हरी १ धन्नी २ लक्ष्मण ३ खेचर ४ भए, खेचर आवस्थिक यज्ञ वेउरामें किया ते खेचरके अवस्थी भए, हरिके पुत्र बबुआ तिन्हें यज्ञमें दीक्षा लिया इनीसे दीक्षित बबुवाके कहाये और बावन ५२ ग्रन्थपढ़े इसी बावन ग्रन्थी कहाये, तिही वंशमें एक देवनाम करके पैदा भए ते अवस्थी कहाये, लक्ष्मण धन्नीधर बसे मनोह में लक्ष्मणके पुत्र बोदल ई तीन वेद पढ़नेसे त्रि-पाठी भए और धन्नीधर रहे मनोहमें ये महोनके तिवारी कहाये, धन्नीधरके पुत्र ५ लच्चे १ मन्नो २ सवसुख ४ केशव ४ रघुनन्दन ५ रगुनन्दनके पुत्र २ नन्दभुषण १ मङ्गल २ मङ्गलके बिरहिनीमाहै नन्द-भुषणके कुरसवांमें तेहि कुरसवामे माधौप्रसाद गजाधरलाल बड़े नामी भए, लक्ष्मणके पुत्र बोदल तिनके पुत्र२ केशवराम कृष्णादत्त, केशवरामके पुत्र ४ उद्धवौ १खेम २ प्रयाग ३ गोपाल, कोई वंशावली में लिखा हैं कि ये चार पुत्र कृशादत्तके हैं, क्योंकि

पुत्र ३ हेमनाथ १ अमोल २ परम ३ हेमनाथके तिवारी भए अमोलके करेलुवा वाले अग्निहोत्री भए परम बसे लक्ष्मणपुरमें लौकिक वैदिक दोनों कर्म्म करने से लक्ष्मणपुरके मिश्र कहाये, प्रयागके पुत्र ३ आशादत्त १ शिवदत्त २ भट्टू ३ आशादत्त खेउरामें बसे तेहिते खेउराके अवस्थी कहाये, उनीका पुत्र जोरहै सो अग्निहोत्र करेलुवामें करै तेहिते करेलुवाके अग्निहोत्री कहाये, परम लक्ष्मणपुरके मिश्र कहाये, प्रयागके पुत्र ३ शिवदत्त १ आशादत्त २ भट्टू ३ आशादत्त खेउरामें यज्ञ किया तेहिते खेउराके अवस्थी कहाये, आशादत्तके पुत्र सदनते सेवरा नाम नगरमें बसे ते सदनिहा दूबे कहाये भट्टूके पुत्र ४ गंगु १ मैकू २ कान्हू ३ जन्हू ४ गंगूके गौतमाचार्य्य मिश्र कहाये मैकू जन्हू मनोहके तिवारी भये जन्हूके पुत्र २ मयदत्त १ हरिहर २ ॥

द्वितीय सखरेज का बंउरा लिख्यते ।

गङ्गी बसे सखरेजमें तिनके पुत्र २ राजाराम १ दामोदर २ राजारामके पुत्र ६ सिद्धौ १ जानी २ चतुरी ३ कर्इ ४ भास्कर ५ छम्मी ६ दूसरी स्त्रीके पुत्र भवानी ७ जानीके पुत्र एकडलामें अग्निहोत्र करनेसे एकडलाके अग्निहोत्रि कहाये, चतुरीके भी

अग्निहोत्रि कहाये। इस्मोके वंश नहीं और सब भाई सखरेजमें रहे वहांसे तिवारी कहाये।

तृतीय डमरोका बिवरण लिख्यते।

कान्ह बसे सखरेज तिनके पुत्र २ दयाल १ परम २ दयालके पुत्र ५ देवी १ तन्नो २ मनी ३ भानु ४ जिन्द ५ परमके पुत्र ३ गनी १ मन्नी २ धन्नो ३।

अथ शिवलीका बेउरा लिख्यते।

मान बसे सेवलीमें मानके पुत्र ४ लोकनाथ १ मोहन २ परम ३ नन्दन ४।

अथ गौरीका बेउरा लिख्यते।

समन बसे गौरीमें तिनके पुत्र ३ बिशाल १ सर्वस २ बाबूराम ३ तेही बंशमें लक्खा पैदा भए तिनहीं गौरीबसाई तबसे गौरीके तिवारी कहाए॥

अथ वरुवाका बेउरा लिख्यते।

गैनी बसे वरुवामें तिनके पुत्र ४ दुलारे १ कमल २ बक्रने ३ दमा ४ दमाके पुत्र ४ अचित १ गल्ह २ माधव ३ गणपति ४, दुलारे बसे भंभुवामें तिनके पुत्र १ नारायणके पुत्र ४ लालू १ वालू २ गन्नी ३ मन्नी ४ यह भंभुवाके तिवार कहाये लालू बालूवाले और गन्नी मन्नी यह दोनों तीन बेद

पढ़नेसे भ्रष्ट भाभुवाके कहाये, और कामल रहे बरुवा में तिनके पुत्र ३ होना १ शंभु २ सदासुख ३ होते भए। कामलके भाई जो वक्ने रहे तिनके पुत्र ३ गन्ने १ विश्वे २ रघु ३ अरु होना बसे पुरवामें और शंभु भए सो बसे बक्सरमें सदासुख बसे दयालपुर में रघुनाथ बसे कुलि गांवमें रघुनाथके पुत्र २ सुक्खो १ बुढ्ढो २ ये दोनों बसे ठेकवामें, बुड्ढोके पुत्र २ हरजू १ प्रभजू २ प्रभजू बसे श्रीपतिपुरमें तिनके पुत्र २ देव १ नन्द २ नन्द बसे जायके घोरहामें देव बसे श्रीपतिपुरमें तिनके वंशमें नारायणदास पण्डित होते भए।

अथ गूदरपुरका बेउरा लिख्यते ।

चैनो बसे गूदरपुरमें तिनके पुत्र ४ नन्दन १ हरिराम २ कान्हई ३ गगाऊ हरिरामके पुत्र १ चन्द नई त्रिपाठी गूदरपुरके कहाये।

अथ हरबसपुरका बेउरा लिख्यते ।

सुखई हरबसपुरमें बसे तिनके पुत्र २ मकुन्द १ गरुड़ २ मुकुन्दके पुत्र ३ जाय १ कान्हो २ मुरारि ३ यह सब हरबसपुरके तेवारी कहाये।

अथ सुराजपुरका बेउरा लिख्यते ।

माखन बसे सुराजपुरमें तिनके पुत्र ३ वनऊ

१ चक्र २ शङ्कर ३ वनजके पुत्र १ कान्ते होते भए, चक्रके पुत्र १ राम और शङ्करके पुत्र धनपति।

पचोरका बेउरा लिख्यते।

अद्दल बसि प्रचोरमें तिनके पुत्र ३ गंग १ मन्नू २ कामले ३ ई प्रचोरके तिवारी मरियानीसें बहुत हैं जोधा श्रीकृष्णी गणेश।

अथ चिङ्गसपुरका बेउरा लिख्यते।

बद्दलू बसि चिङ्गमपुरमें तिनके पुत्र ४ गन्नी १ धन्नी २ घना ३ छन्नी ४ बद्दलू अद्दनूके वंशते कोई जुईमें सहावामें जाय बसि कोई वर्गदा निकट जाय बसि वहांके तिवारी कहाये।

चैनी तिवारी गूदरपुर वालेका दूसरी बेउरा लिख्यते चैनीके पुत्र ४ नन्दन १ हरीराम २ कन्हई ३ गङ्गउ, हरीरामके पुत्र ६ राते १ पाते २ हर्ष ३ साते ४ चंदू ५ बछर्न ६ चंदूके पुत्र २ रामनाथ १ जगन्नाथ २ गूदरपुरसे काठारे जाय बसि ते काठारेके तेवारी कहाये, कन्हई बड़े प्रतापी भए तिनके पुत्र २ रमई १ घाघ २ जहाङ्गीराबाद निवासी भये, घाघ अपने नामहीसे प्रसिद्ध हैं। रमईके पुत्र ५ आशादत्त १ दमा २ गोपाल ३ गोवर्द्धन ४ चस्तू ५ आशादत्तका बिवाह एक पटनहा दुबे बीरबल अक-

बर बादशाहके सभापति तिनकी कन्याकी बिवाह जबर्दस्तीसे कीकिया, तब रमई पुत्रको परित्याग कर दिया घाघने ग्रहण किया तब रमईने घाघको भी त्याग दिया, आशादत्त कुलदेवता पूजनेको आये घाघने ग्रयण किया तबसे बीरबली कहाये नम्रताको प्राप्त हुए इनाके पुत्र ३ श्रीधर १ लक्षिमण २ लोकनाथ ३ श्रीधरको बुवावाले कहाये ये सब संपइग्राम बासी भए, गोपालके पुत्र २ धरणीधर १ जगन्नाथ यह पडरी ग्रामवासी भए। गोवर्द्धनके पुत्र ४ कमलापति १ चक्रपाणि २ मुरली ३ मोहन ४ कठेरूवा ग्रामवासी भये, चतूके पुत्र ४ लाला १ रूपई २ दिवता ३ मोहन ४ जहाङ्गीराबाद बासी भये, रूपई के पुत्र ४ रामभद्र १ दशरथ २ हरिणाम ३ तेजनाथ ४ तेजनाथके पुत्र ३ थोखे सिंहाते एते जहांङ्गीरा बादी श्रेष्ठ भये। मोहन के तिवारी भट्टूके बंशमें कहू तिवारी बड़े प्रतापी भए तिनके पुत्र २ भयदत्त १ हरिहर २ ये दोनों भाई बेहटा ग्राममें यज्ञ किया तबसे दीक्षित सञ्ज्ञा पाई। हरिहरके पुत्रभे श्रीकान्त ये बड़े गुरुभक्त थे भयदत्त गुरु बचन उल्लङ्घन किया इससे श्रीकान्तकी सदृश प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त भए, भयदत्तको अपने नामहीसे प्रसिद्ध हैं

श्रीकान्त के पुत्र ३ ॥ श्रीकान्तः श्रीजनो भूत्सुर मुनि मनुजै माननीय .प्रतापोलोके विख्यात् कीर्तिर नृप जन सकलैः पूजनीयो सदैव सास्त्रज्ञो मातृभक्तः कुल मद दहनो। बुद्धि सिन्धुः क्षमा-वान् दाता त्राता जनानां कुल सुत जनकः प्राण तुल्यो यतीनाम् ॥ श्रीकान्त के पुत्रन के नाम ३ खगेश्वर १ धर्म्मेश्वर २ बीरेश्वर ३ बीरेश्वर के वंश नहीं है खगेश्वर के पुत्र २ बहोरे १ सन्त २ धर्म्मेश्वर पुत्र १ जदुपति सन्यासी होइगे तिनको योतिपुरके राजाने फिरि यज्ञोपवीत पहिराया अरु सिखा राखी तबसे जदुपति ज्योतिपुरिहा वाजते हैं सन्त के पुत्र १ अनन्तराम बहोरे के पुत्र २ लाला १ हरिहर दत्त २ लाला के पुत्र ४ सतानन्द १ भागवन्त २ भोलानाथ ३ मित्रानन्द ४ सतानन्द के पुत्र २ नयनसुख १ हरीलाल २ नैनसुख के पुत्र २ सूर्य्यमणि १ मकुन्द २ हरीलाल के पुत्र ३ नन्दन १ कुमार २ हेमनाथ ३ कुमार के वंश नही है सूर्य्यमणि के भी वंश नाही है भागवन्त के वंश के नारायण दास खेरे में है मुकन्द के नन्दन के जगू में अरु राजाराम पुरमें मथुरानाथ के पुत्र सूर्य्यप्रसाद १ गोकुलप्रसाद २ सूर्य्यप्रसाद के पुत्र ४

चन्द्रधर १ गोकुलप्रसाद २ अंबादत्त ३ गिरजादत्त ४ अरु मथुरानाथ के भाई कालीप्रसाद तिनके पुत्र ४ गङ्गाधर १ देवदत्त २ भवानी सहाय ३ भवानीदत्त ४ एसब राजारामपुर में बस्ते हैं॥

इति काश्यपी गोत्र॥

॥ अथ कास्यप गोत्र का हाल लिख्यते॥

भरद्वाज के पुत्र जिजीखव्य तिन के मरे पर एक कस्यपके वंशका पुत्र मन्दर नाम रहैतो जाय के भरद्वाज के पुत्र को जियाय दिया एसा देखि के भरद्वाज मुनि प्रसन्न भए अरु मन्दर से कहा कि तुमहूं हमारे पुत्र आजुते भयो जब इतने में कास्यप जाय पहुंचे कहा कि मन्दर मेरा पुत्र है ऐसो तकरार सुनि के मन्दर कहने लगे कि हम अपना कुल गोत्र प्रथक् करेंगे तब उन कास्यप गोत्र रक्खा कास्यप गोत्र तेवारी कुल मझुवा की उत्पत्ति से उनका नाम नाऊ रहे सो उसने एक बालक पाया नार सहित कोई डारि गयाथा घूरे उपर से उसका नाम नाऊने पाला तब उसने एक काश्यप गोत्र तिवारी से यज्ञो पवीत कराया उसी यज्ञो पवीत के समय काश्यपी तेवारी ने कहा कि इस बालक का नाम तुम गम्भू रक्खा यह हमजानते

हैं कि यह बालक मन्दर की वंश का है इसका नाम मङ्गल चाहिये अप्रतिष्ठित होने से नाम ग्राम सब लोप हो जाते हैं मङ्गल के पुत्र २ सङ्कर १ दयाल मङ्गल तीन वेद पढ़नेसे त्रिपाठी भए। दयाल एक दांय महावर के राजाके इहां गए यज्ञ कराई बहुत धन पाया जब लौटे तो यमुना के बीहड़ में रात्रि को किनारे रहे सोवत में रात्रि को चोर आर तब दूनो जने सोवत रहैं तब सङ्कर को दबाय लिया अफसोस काटने को विचार किया परन्तु अंधकार से छूरा विपरीत उलटा होगया तिस्से गला कटानहीं परन्तु सङ्करने चियाई साधी तब चोर जानो कि सङ्कर मारे गया धन चोर लेकर चले गए अरू छूरा गिरपड़ा सो प्रातःकाल दयाल ने पाया अरू सङ्कर सहित घर आए अरू माता से हाल कहा माताने छठी सङ्कर को धराई और कहा कि हमारा कुल में एक से उना नाम नाज रहै सो बड़ा सेवक था छूरा का बल उसी के प्रताप से ना चल सका फिर उसी छूरा की पूजा कराई तब से इस बंश में छूरा की पूजा अद्यापि चली आती है कुतुम नाम छूरा का रहैति सोसे कुतमौहा पदवी प्रसिद्ध भई मङ्गल महारपुर

बसाया दयाल के पुत्र २ गङ्गाप्रसाद १ सज्जनलाल २ गङ्गाप्रसाद बसे गलहथिया सज्जनलाल बसे सुकड्डपुरमें सङ्करके पुत्र २ चन्द्रमौलि १ देवकीनन्दन २ चन्द्रमौलि रहे मदारपुरमें देवकीनन्दन बसे बड़ौरा में तेबड़ौरा में सामबेद पढ़ेते सामबेदी कहाए चन्दमौलि मदारपुरवालेके चारस्थान ऐहार १ बिनोर २ तेबारीपुर ३ मिहार ४ और सर्व कुलमङ्गुवा की जड़ मदारपुर है खुचकीपुरवाले हरदीन के पुत्र २ चिन्तामणि १ सालिग्राम २ चिन्तामणि के पुत्र २ गदाधर १ गुरुचरण २ सालिग्राम के पुत्र ३ चन्द्रधर १ जयधर २ गेंदाधर ३ ईमरिआनीमें बस्ते हैं जयधर के पुत्र पछाह बमनीपुर में बस्ते हैं चन्द्रधर के कुलमौहा डूटरी में बस्ते हैं श्ररू इसी काश्यप के बंश के उमरीते निकसि गए जिनका परम नामथा काशीमें जाय कर बिद्या पढ़ी उनके बंश में शावले पैदा भए तिनसीरूमें आवस्थिक यज्ञ किये तब तेशांवले के बंशके सीकके अवस्थी काश्यप गोत्री कहाए शांवलके पुत्र ४ चन्दी १ बन्दी २ सधान ३ बोधन ४ बोधन के बंशमें बड़े तेजस्वी नारायण पैदा भए तिनके पुत्र जगन भए तिनने बिन्धेश्वरी में तप

लिया देवीने प्रसन्न होकर तरवार दी तब गौतमन को आप जीति लिया अपना को परशुराम सदृश मानो अरुमोजरा सलाम जुहार करबने लगे ठकुरी को खिताब राखी तबसे ठाकुर बाजते हैं जगन के पुत्र ४ दमा १ वदले २ उग्रसेन ३ रायमल ४ भए दमाके पुत्र १ भगवानदास तिनके पुत्र ३ चन्दा १ मन्दा २ खांडेराय चन्दाके पुत्र द्वारिकादास खांडेराय के पुत्र ३ रायनन्दलाल १ धारामल २ भगवन्तराय ३ इनके पर्छांह में हैं द्वारिकादास के पुत्र ४ रामसिंह इनके बगलावाले जहानाबाद मे हैं रुद्रसाह इनके खजुहा में गढ़ में हैं कालाशाह द्वारिकापुर में अरु पिरोजपुर में हैं पूरणमलई वेरहर में अरू अमोली में हैं ऐ अमोली के मुसल्मान भेजागाके वास्ते वार भायहैं रायनन्दलाल के लालपुर में खुमान सिंह वसे हैं धारामल के पुत्र ४ लालसाह १ सुआलसाह २ मङ्गलसाह ३ बालकिसुन ४ लालसाह के पुत्र २ खरगसेन १ संग्रामसाह २ खरगसेन के पुत्र ३ मूरतिसिंह १ गजाराय २ दुन्दराय ३ मूरतिसिंह के पुत्र १ खलकसिंह इनके पुत्र १ प्रथीराय तिनके पुत्र नेवाज सिंह इनके पुत्र दुरगासिंह

तिनके पुत्र ३ पञ्चमसिंह १ हीरासिंह २ कालिकासिंह गद्दी पर है संग्रामसाह के पुत्र ४ रञ्जीतराय १ हिन्दूसिंह २ भवानीसिंह ३ मान्धाता ४ रंजीतराय के पुत्र २ राजसाह १ अह्लाद सिंह २ राजसाह के कन्या १ देश-कुमारी देशकुमारी लहुरी के त्रिवेदी को व्यहीयी तिनके पुत्र २ कल्यान १ शङ्कर २ पमी जगम्बंसी कहाए हिन्दूसिंह के पुत्र १ परसादसिंह तिनके पुत्र अमानसिंह तिनके पुत्र २ अजीतसिंह १ पेम सिंह २ अजीतसिंह के पुत्र १ विधासिंह १ अधारसिंह २ विधासिंह के बंश नाहीं अधार सिंह के पुत्र बिजयसिंह। तिनके पुत्र २ मोहन सिंह १ मङ्गलसिंह २ अजीतसिंह के कन्या ४ निधानी १ सिरदारी २ बिटोली ३ चन्दनी ४ निधानी प्रभाकरके अवस्थिनके व्याहीं सिरदारी पांडे गिगासोंके बिटाली अग्निन के मिश्रनके बिबा हीं चन्दनिबाला बैसुकूलनके बिबाहीं पेमसिंहके कन्या १ जानकी आंकिन के मिश्रनके बिबाहीं भवानीसिंहके पुत्र १ सवाईसिंह तिनके जमाहर सिंह अरुकन्या थी सो सैवसूमें सङ्गमलाल बाजे-पई नखलिऊवाले को व्याहीं जमाहिरसिंह के पुत्र

५ बरजोरसिंह १ उत्तमसिंह २ बाजीसिंह ३ सोभासिंह ४ हिंमतसिंह ५ बरजोरसिंहके पुत्र शिवराखनसिंह हिंमतसिंह के पुत्र ज्वालासिंह भए मान्धाताके पुत्र ६ अरु कन्या १ सो दुर्गादासके शुक्लनके विवाही गैंतहीके बंशमें कलयान माधवके पुत्र पैदा भए अरु ६ पुत्र एहैं धारजीत १ भारतसाह २ सुमेरुसाह ३ विशुसिंह ४ हृदय साह ५ गिरवरसिंह ६ सुमरुसाह की कन्याकी पुत्र मिश्र सोंठियायेके गुरुबकस कालीचरण गौरीसङ्कर अम्बिका आदि हैं विशुसिंह के पुत्र १ दरियाव सिंह तिनके पुत्र ४ गङ्गासिंह १ मदनसिंह २ सर्वजीतसिंह ३ काशीसिंह ४ गङ्गासिंह के पुत्र १ अरु कन्या १ पुत्र का नाम बलदेवसिंह तिनके पुत्र मदनसिंह कन्या बिवाही पैकूकी शुक्लनके तिनके पुत्र बिहारीलाल छटर्रा में हैं कासी सिंह के पुत्र २ जालिमसिंह १ देवीसिंह २ हृदय साह के पुत्र ३ कुमारसिंह १ मेहरवानसिंह २ शिवबकसराय कुमारसिंह कीं पुत्री २ एक व्याही मोहनलाल छगीके शुक्लन को दूसरी चवस्थिन को मेहरवानसिंह को पुत्री १ सेवसू में खामीदीन बाजपेई को व्याही गई सिवबकसराय के पुत्र १

बुढ्ढूसिंह गिरवरसिंह के पुत्र २ खुसालसिंह १ खुमानसिंह २ अरु कन्या १, मनोह में गौरीसेवक को बिवाही खुसालसिंह के कन्या २ मूना १ बतासी मूना बिहारी के पौती को ब्याही बतासी गौरीसेवक के भतीज गुरुचरण को ब्याही खुमान के पुत्री १ गोकुल मिश्र को बिवाही गई लछिमन नाम रहै इटरी में बस्ते है मङ्गलसाह के ओरिषा कुम्हेड़िया में हैं बालकिसुन के रायपुरमें हैं दमा रा रमें कुडरीमें उमरी में एसौ रूके हैं लेकिन जगन्वंसी नहीं हैं बरिगवां में दोमईमें सुजावलपुर टिकरा में कङ्करेहा में हैं बैबई में कनैरा में रारिमऊ में रामखेर पठनी में हैं बहले के राउतपुर कथिला में हैं पपरेंदे में बिरसिंह पुरमें तेवारी पुर में पसि मामें हैं मले के बनवही में भदे उना में बरीमें तिलोकीपुर में हैं इहांताई जगन्वंसी वंशजानम जगन्वंसो की उत्पति परमतेवारी उमरीवाले के वंश में अवस्थि भे तिन अवस्थीयों ने दवी की पूजाकी अरु गौतम को बिजय किया तब से ठाकुरी खिताब भया जगन्वंसी कहाए जेहि घराने में कन्या बेहते हैं गद्दी में बैठाते हैं भी तो वोभी जगन्वंसी कहलाते हैं।

कश्यप गोत्र तिवारी कुतमहुवा का आसामी स्थान विश्वालि।

कुल गोत्र	असामी	स्थान	विश्वा
तिवारी	कुतमहुवा	गङ्गाप्रसाद	गलहथे के ७
तिवारी	कुतमहुवा	सज्जनलाल	लुकजपुर के ५
तिवारी	कुतमहुवा	चन्द्रमौलि	मदारपुर १०
तिवारी	कुतमहुवा	देवकीनंदन	बड़ौराके-साम्वेदी १०
तिवारी	कुतमहुवा	चन्द्रमौलि	एहारके १०
तिवारी	कुतमहुवा	चंद्रमौलि	विनोरके ५
तिवारी	कुतमहुवा	चंद्रमौलि	तिवारीपुरके २
तिवारी	कुतमहुवा	चंद्रमौलि	निद्दोरे ५
तिवारी	कुतमहुवा	चिन्तामणि	खुचकीपुरके ५
तिवारी	कुतमहुवा	सालिग्राम	मरियानीके ७

अथ काश्यपी गोत्र तिवारी का आसामी स्थान विश्वालि।

कुल गोत्र	असामी	स्थान विश्वा
तिवारी	रामके वंश में	मनोह के वि० ५
तिवारी	गङ्गी का वंश	सखरेज के वि० १०
तिवारी	परमका वंश मचई	उमरी के वि० ६
तिवारी	मानका वंश लोकनाथ	सेवलीके वि० १०
तिवारी	ससनका वंशबाबू	गोरी के वि० ५
तिवारी	गैनीका वंश भौदास बक्षन	बसुधा के वि० ५

चैनी बसे	गूदरपुरमें	५
सुखईका बंश गरुड़	हरबसपुरमें	१०
माखनका बंश कान्ते	सुराजपुरके	१०
षद्‌लूका बंश गङ्गा	पचोरके	२
बद्दलूका बंश कान्ते	चिङ्गसपुरके आधा	५
अर्चित गरुड़के	बरुवाके	१०
गणपति माधवके	बरुवाके	१०
भँभुवाके	गोपालपुरके	१३
कंसके	नौबस्ताके	१२
कन्हईके	गूदरपुरके	५
आशादत्तके	मनोहवाले	५
राजाराम के	सखरेजके	१०
मङ्गल के	बरुवाईसे विरुछिनीमें	५
रमा के	सँपईवाले	१८
गोपाल के	पड़रीवाले	१६
गोवर्धन के	कठेरुवावाले	१९
चतुर्भु	जहांगीराबादवाले	२०
घावके	जहांगीराबादवाले	१५
रमाके संपईवाले	ज्योतिपुरिहा	१५
आशादत्तके वीरबली	जहांगीराबादके	१५
रामनाथ जगन्नाथ	काठारेके	१४

का०ती०चिंगसपुर वि०	५	का०ती वैनउराको वि०	३
काकवारी के	५	दयालपुर के	५
गुनरी के	५	सीपतपुर के	१०
चिलौली के	१०	धतुरा के	५
वोधी के	०	रतनपुर के	१०
धनञ्जई के	४	आनन्द के	८
महरँगपुर के	१०	बरगदपुर के	५
कुम्हड़ाय के	५	सपरीपुर के	५
छीतावाले	१०	बकसर के	१०
पँचभैया के	१०	भगडरामी के	५
घरवाई के	५	श्रीधर के	५
सुखीवा के	५	बोदल के	१०
डखीवा के	७	गडरी के	२
चराडमंड के	१०	सिहंडा के	२
कस्यप के	२	पुरवा के	२
साहेवा के	२	शाहाबाद के	२

कश्यपी गोत्र अवस्थियों का आसामी स्थान विश्वा लि०।

असामी	स्थान	विश्वा
शांवले के	सोरुवाल	१०
खिचर के	खैउराबाले कन्हाए	१०
देवके बावन ग्रंथी	बद्कावाले	१०
आसादत्त के	खिउरवाले	४
यज्ञ के	खिउरावाले	४
सीरूकी जगनवंशी	जहानाबादके	२
काश्यपी गोत्र शुकुल	बिगहुली के	४
काश्यपी गोत्र पांड़े	भट्टाचर्य्य असनी के	५

काश्यपी गोत्र दुर्बोंका असामी स्थान विश्वा लिख्यते।

स्थान	विश्वा	स्थान	विश्वा
गजहथिके	५	सुराजपुरके	४
मगरायल के	७	खुड़हा बिन्हारी के नागपुरी चौधरी	२
सीकके सद्दनिहा	४	सगुनापुरी के	४
आटीके	४	लीगिरवाली बिठुरके चौधरी	२
बगरके	४		

काश्यपी गोत्र दीक्षितों का असामी स्थान बिश्वा लिख्यते।

असामी	स्थान	बिश्वा
श्रीकान्त के	जगूर्क	२०
हरीबबुवाकेबावनचन्थी	बदरका के	१६
भैदेनके	बदरका के	१३
किउनाके	कुतमहुवाके	१०
बानके उत्तम	बरौली के	१०
मदारपुरके	कुतमहुवा के	४
सिउली के	सिरवहया के	४
थलई के	कुतमहुआ के	४
पिसीवाले	सिहुण्डा के	१
रूपई के	कुतमहुवा के	४
चन्दवाले	बिहारपुर के	२

काश्यपी गोत्र अग्निहोत्रियों का असामी स्थान लिख्यते।

असामी	स्थान	बिस्वा
अमोल के	करेलुवा के	१०
हेमनाथ के	करेलुवा के	१०
जामी के	एकडला के	५
चतुरी के	एकडला के	५
अटीर के	संसारवाले	४
खिरी के	दरियावादी	४
कलुहा के	लखनऊवाले	४
सगुनापुरी	कोड़ा के	४
मगरायलहा	कठिहवा के	४
खिभरा के	खिभरावाले	४

काश्यपी गोत्र मिश्रों का असामी स्थान. बिस्वा लिख्यते।

असामी	स्थान	बिस्वा
परम के	लक्ष्मणपुर के	४
लक्ष्मण के	लक्ष्मणपुर के	७
कल्याण के	नगरवाले	१०
देवसरिहा के	बिसुनखेरवाले	४
लक्ष्मण के	कलराण के	४

कश्यपी तेवारी मनोहर के वंश में भट्टू के पुत्र गंगूने गौतम कर्म कियाते गंगूका गोत्र गौतम गौतमाचार्य्य मिश्र भए तिनका असामी स्थान लिखते ॥

गौतमगोत्र　　गंगूके गौतमाचार्य्य मिश्र　　१०

॥ इति कश्यपी गोत्र तिप्रवरा ।

शाण्डिल्य ऋषि।

अथ शांडिल्य गोत्रका वर्णन करते हैं

ब्रह्मन्युत्रो मरीचि स्त्रि भुवन विदितः पावनः पावनो नाम्। तस्मात्जज्ञे शुभांगः श्रुतिधर रपतः सुक्रतः कश्यपः शोभितांगः॥ शाण्डिल्य स्तस्य चाग्ने रभो वोत्सुजनः सर्व विद्या निधाना। देवानां सेवनाढ्यो भुवि कुल बिदितो धृगिन तुल्य प्रतापः॥१॥ ब्रह्मा के पुत्र मरीचि तिनके कश्यप तिनके यज्ञके कुण्ड से शाण्डिल्य उत्पन्न भए शांडिल्यके पुत्र मनोरथ तिनके स्त्रीं २ एक मजग्रामसे दूसरी हमीरपुरमें

तिनके पुत्र ३ कमलनाभ १ पद्मनाभ २ देवनाभ ३ कमलनाभ बसे मऊग्राममें पद्मनाभके पुत्र हरिहर तिनको रघुवंशी राजा उपाध्यायकी पदवी दी हरिहरके पुत्र दूसरा था जिसका नाम शाङ्गधर था तिनके पुत्र २ गदाधर १ त्रिपुर २ त्रिपुरतक धतुरामें बसे त्रिपुर हमीरपुरमें आय यज्ञ किया तब फिर कान्यकुब्जकी पदवी मिली त्रिपुरके पुत्र ३ बाबू १ खेमी २ हेमनाथ ३ बाबू खेमी मिश्र भे भोजपुरके हेमनाथ बसे हमीरपुरमें ते हमीरपुरके मिश्र भए गदाधरके पुत्र २ गङ्गाप्रसाद १ श्रीहर्ष २ स्त्री २ सती १ सत्या २ सतीके पुत्र ४ बली १ बाबू २ बीरेश्वर ३ उमादत्त ४ सत्याके पुत्र २ गोपी १ हंसराम तिनने अंटेरमे यज्ञ किया सोहिते अंटेरके दीक्षित भए गोपी मिश्र भए। बलीके पुत्र ४ कङ्गू १ चतुरी २ समाधान ३ घासीराम ४ कांगू बसे अटेरमें ३ ए पांचो कांगूके नामसे प्रसिद्ध हैं कांगूके बंसके कांगूके कहाए, चतुरी १ समाधान २ घासीराम ३ ए ३ बलीके नाम ते [illegible] के पुत्र ४ सिंहा १ भट्टाचार्य्य २ माधव ३ पुरुषोतम ४ सिंहाके पुत्र ३ चक्रपाणि १ सिखर २ चन्द्रधर ३ ए बटपुरमें जाय बसे बाबू यज्ञकिया तिहते अपने नामहीसे

प्रसिद्ध हैं इनके पुत्र ३ बिहार्या१ राघो२ बनवारी ३ बीरेश्वरने भी यज्ञकिया तिन्हिंसे नामी रहे बीरेश्वरके पुत्र ५ मुरलीधर १ निव्यानन्द २ गिरधर ३ जगजीवन ४ शिरोमणि ५ मुरलीधरके पुत्र १ तारपति नेवादामें रहे तिनके वंशमें भीमसेन वाणी विलास काशीमें शास्त्रार्थ किया इससे नामी भए जगजीवनके पुत्र २ महाशर्म १ धर्म २ धर्मकेपुत्र १ जयकृष्ण जयकृष्णके पुत्र ५ जगदेव १ खमकरन २ धीरेश्वर ३ यज्ञदत्त ४ गृहपति ५ जगदेवके पुत्र ५ भावनाथ १ बुद्धाराम २ सेवा ३ लक्खू ४ बिरजू ५ भावनाथके पुत्र ४ दलू १ बेलऊ २ रजऊ ३ शिवप्रसन्न ४ लक्खूके पुत्र १ छेदीलाल तिनके पुत्र ६ दूलचन्द्र १ अतिसुख २ बंसगोपाल ३ सालग्राम ४ संकर मन्नालाल ६ बिरजूके पुत्र २ उजागर १ गुमान २ गुमानके पुत्र २ मारवन १ सङ्कर निव्यानन्दके बंस नहीं भया शिरोमणि बसे शाहाबादमें शाहबादी कहाए गिरधरके हिन्दूपुर में तिनके पुत्र २ गौरीसङ्कर १ देवीगुलाम २ गौरीसङ्करके पुत्र २ ज्वालाप्रसाद १ रामचरण २ ऐ भी हिन्दूपुरमें बस्ते हैं और तिनके चचेरे भाई ४ सदासुख १ रामबकस २ सलीदीन ३ शिवबकस

४ सदासुखके पुत्र १ लक्ष्मण रामवकसके पुत्र १ वृन्दावन१ सत्तोदीनके १ पुत्र २ काशीप्रसाद १ मथुरा २ वृन्दावनके पुत्र २ कुञ्जविहारी १ भाऊलाल २ काशीप्रसादके पुत्र मनझूर्या १ विश्वेश्वर २ कुंज विहारीके पुत्र १ द्वारिकाप्रसाद भाऊलालके पुत्र २ योगेश्वर १ वागेश्वर २ और वृन्दावन रामवकसकी राशि भए हैं सब जने हिन्दूपुरमें वस्ते हैं और जगजीवनके भैसिक वंसथीमें वस्ते हैं उमादत्त के पुत्र ४ बुधे १ काशी २ जदु ३ गोविन्द ४॥

॥ अथ शांडिल्य गोत्र मिश्रोंका हाल लि० ॥

श्री हर्ष वसे कांपिलामें इन मिश्रकी पदवी पाई तिनके पुत्र ४ हिमकर १ गोपीनाथ २ बलकर ३ परसू ४ गोपीनाथ एक समय धोबीसे बिगाड़ किया अरु पुत्रके विवाहमें वस्त्र आपने धोय लिये तबसे गांवमें सबलोग गोपीनाथ धोबिहा कहने लगे तबहीसे धोबिहा मिश्र कहाए अरु कनउजमें वस्ते हैं लखपती रहे तिहिते लखा गजाधरके वाजते हैं सीतारामके पुत्र माधोव प्रसाद दुर्गाप्रसाद मोहनलालादि कन्नौजमें धनी प्रसिद्ध हैं हिमकर के पुत्र ३ शङ्कर१ छेमराम २ जयभद्र ३ ए भटेउरा में वसे जयभद्रके पुत्र २ लक्ष्मण १ वक्कनू २ हैंगेगा-

सोंमें बसे परशूके पुत्र ४ कमलपाणि १ पद्मपाणि २ चक्रपाणि ३ वंसीधर ४ कमलपाणिके पुत्र ४ लालमणि १ लोकनाथ २ बिश्वनाथ ३ चतुर्भूज ४ चतुर्भूजसौराकी सरायमे बसे तिनके पुत्र ४ सुक्खे १ सुन्ने २ दीप ३ बुधा ४ दीपसे कोई राजशाही बाजते हैं शीतल त्रिवेदीके काज किए तेहिते बिश्वनाथ बिबाहे पांलीमें सुक्खेके वंसमें गागम पाथम नामी भए गोपीनाथके पुत्र ४ श्रीधर १ वैकुण्ठ २ मथुरानाथ ३ माधोराम ४ श्रीधरके पुत्र ४ में चतुर्भूज बसे असनीमे यज्ञ धोबिहा कहाए गोपीके पुत्र प्रभाकर तिनके पुत्र २ माधव१ वैकुण्ठ२ वैकुण्ठ बसे हजारी ग्राममे मथुरा बसे सरोर ग्राममें मधुराय गुगायमें बसे खेमकरणके खेमकरणाहीके कहाए संहिता एक सामबेद की पढ़त रहे अरु वृन्दावन सेवन करत रहे किसीका भय नहीं किया अकेले वनमें बसते थे सिहिते खेमकरण वाले संहिता बन बैशरीके कहाए॥

॥ शांडिल्य गोत्र दीक्षितोंका असामी स्थान बिश्वा लि० ॥

असामी	स्थान	बिश्वा
बलीके	अटेंथियाके	१६
बावूके	तथा	१८
बीरेश्वरके	तथा	२०
उमादत्तके	तथा	१५
कांगूके	तथा	२०
हंसरामके	तथा	१५

शांडिल्य गोत्र मिश्रोंका असामी स्थान और बिश्वा लिख्यते।

हिमकरके	भटिऊवाके	१६
परशूके	भीरासरायके	२०
गोपीनाथके	असनीके	१६
चतुर्भुजके	गोपीनाथ धोविहाकहाए	१६
लालकरके	असनीके	१५
गोपीके	नौगांयेके	१३
त्रिपुरके	कपिलाके	१०
पद्मनाभके	मऊके भये	८
बावके	पानीपुरके	८
खेमकरणके	भोजपुरके	५
हेमनाथके	हमीरपुरके	४
साहिताबन	केशरीके	३

॥ इति श्रीशाँडिल्य गोत्र त्रिप्रवरा ॥

सांकृत ऋषि ।

॥ अथ सांकृत गोत्रका हाल वर्णन करते हैं ॥

ब्रह्मन्यु त्र: कर्दम स्तस्य पुत्रो जात स्तस्या र्क्षारण्य शास्त्रश्रोता कपिल स्तस्मा त्सर्व विद्या धिकारीदेवै पूज्यो वैसुन: सेफहव ॥१॥ ब्रह्माके वंशमें शांकृत्य गोत्रके वंश शुक्ल वा मिश्र जिन रिषिनके प्रतापसे उत्पन्न भए तिनकी प्रसंसा आज तक चली आती है यह कीर्ति शुक्लन मेलिको प्रगट करना चाहिये ॥ अथ ब्रह्माका वंश ॥ ब्रह्माके पुत्र कर्दम तिनके कपिल तिनके अजीगर्त तिनके सुन: सेफ तिनके

जरक्काल तिनके आस्तीक तिनके वंशमें औवं भए तिनके सांकृत तिनके कारनत्य तिनके सौंघायन तिनके वंसमें प्रथवोधर सरवार मेंश्वरहर ग्राममें वसत रहैं सरवरिया ब्राह्मण वाजते रहे कुछ दिनके वाद कान्यकुब्ज संज्ञापाइ त्रिगुणापतिके अवस्थी कौशिकीवाले कहाए तिनके पुत्र २ दिवाकर १ चन्द्राकर तिनके पुत्र नाभि अति अनूप सुन्दर रहे तनने मनीराम वाजपेइसे शास्त्र पढ़ा न्यायशास्त्र वा व्याकरणमें वहुत निपुण भए तव मनीरामने अति विद्वान देखिके शुकुलको पदवी दी और कुछ दिन के वाद अपनी कन्या व्याह दी अरु पुरनियांग्राम में वसाया तवसे नभेलपुरनियांके नामसे प्रसिद्ध भए मनीराम लखनउवाले नाभिके पुत्र३ वेणी१ माधो २ भरत ३ वेणीके पुत्र ३ इनके पुत्रोंका नाम हीं प्रसिद्ध हैं गहिरी १ गोड़ा २ अवावा ३ माधोके पुत्र ४ इनके पुत्रका ग्रामहीं प्रसिद्ध है अनहा १ इटावा २ कुवरपुर ३ गलहथ ४ भरतके पुत्र ३ आनन्द १ मूकाता २ छीप आनन्द अकवरपुर जाय वसे अकवरपुरके कहाए सुकाता पुरनियांके कहाए छीप पुरनियाके कहाए।

आनन्दके पुत्र ३ कासी १ सुर्ली २ तेजदत्त

३ काशीके पुत्र ३ खाना १ दमन २ भागीरथ ३ आनन्दका वंस सब अकबरपुरमें है सुकताके पुत्र ८ दो स्त्रीसे पहिली स्त्रीसे पुत्र ७ कामता १ सायर २ हरदत्त ३ कल्यान ४ गौरीदत्त ५ प्रभू ६ शम्भू ७ दूसरी स्त्रीसे पुत्र १ खुर्दपति तिनके पुत्र ३ रूपन १ बहेरू २ षेमानन्द ३ बहेरु पुरवासे निकसिकै रमचका जाय वसे खुर्दपति पुरैनियासे निकसिकै पुरवा जाय वसे षेमानन्दके पुत्र ४ ईस १ हरीब्रह्म २ मधुराम ३ गणपति ४ ईसपुरवासे निकसीकै असनी जाई वसे मधुराम भी पुरवासे निकसिकै असनीमें जाय वसे हरिब्रह्म पुरवासे असोहैमें जाय वसे गणपति पुरवासे निकसिकै फत्तूहा जाई वसे ईस अपने नामहीसे असनीमें प्रसिद्ध हैं मधुराम अपने नामसे असनीवा गंगासोंमें प्रसिद्ध हैं हरिब्रह्मके अपने नामहीसे असोहैमे प्रसिद्ध हैं गणपतिके पुत्र २ बिस्वनाथ १ हरिनाथ २ बिस्वनाथके पुत्र २ छट्टू १ दूली २ छट्टूके पुत्र ४ बैजनाथ १ चैतनाथ २ झूक्काराम ३ गुलालचन्द ४ हरिनाथके पुत्र १ बदन फतूहाबादी प्रसिद्ध है दूलीके पुत्र २ भाऊराम १ सीतलदास २ बदनके पुत्र १ संगम १ गणपतिके वंशको गङ्गारामने फतूहाबादमें बसाया छीपके पुत्र २

धना १ दुजदत्त २ धना पुरैनियासे निकसिकै आजमगढ़में जाय बसे दुजदत्त पुरैनियासे निकसिकै जौनपुरमें जाय बसे धनाके पुत्र २ सिङ्गलाल १ त्रिविक्रम २ सिङ्गलालके पुत्र निकोसी जाय बसे धना दुजदत्तके अछाए त्रिविक्रमके पुत्र २ धनूराज १ रामेश्वर २ धनूराजके पुत्र २ वीर १ बनवारी २ वीर आजमगढ़में रहे बाल्याहसे मिश्र पदवी पाई बनवारी सचेड़ी जाय बसे भाईवीरके प्रतापसे मिश्र भए रामेश्वरके पुत्र १ प्रजापति १ आजमगढ़से कूटायमे जाय बसे शुक्ल मिश्र कहाए वीरके पुत्र १ घनश्याम घनश्यामके पुत्र १ शिवराम तिनके पुत्र ३ भूधर १ धर्मदत्त २ किसुनदत्त ३ भूधरके पुत्र २ मनीराम १ बच्चूलाल २ मनीरामके पुत्र ४ सर्वांगे १ शुभनाथ २ जगन्नाथ ३ राघव ४ शुभनाथके पुत्र १ मतिराम १ तिनके पुत्र २ मुन्नीलाल १ रामपति २ मुन्नीलालके पुत्र १ गङ्गाधर १ तिनके पुत्र रामचन्द्र तिनके पुत्र ४ जगन्नाथ १ सखीराम २ वीरेश्वर ३ कोटेश्वर ४ जगन्नाथके पुत्र १ हंसराम तिनके पुत्र १ मधुराम आजमगढ़से निकसिके नौगवां जाय बसे मधुरामके पुत्र ४ राजाराम १ मन्साराम २ लीलाधर ३ शिवनन्दन ४ जगन्नाथके

पुत्र १ धरणीधर उत्तर आ जाय बसे चनाके वंश में वीर सिंह बड़े प्रतापी भए पाण्डित्यमें श्रेष्ठ हैं जुलकन शुक्ल डोमिनपुरके कहाए तिनके पुत्र ३ कमलापति १ मतिराम २ गङ्गाराम ३ डोमनपुरसे निकसिके खजुहामें बसे देवी छिन्न मस्ताके उपा- सिक रहे और अकबर बादशाह सूबा फते करके आय खजुहाके पास बाग किया और गङ्गा- रामको बुलाया कुछ सिद्धताका प्रताप भी अ- कबर बादशाह को देखाया तब सिद्धता को देखकर खजुहाका नाम फतूहाबाद रक्खा तबसे फतूहाबादी कहाए कमलापतिके पुत्र १ प्रीतकर कमलापति फतूहाबादसे निकसिके डोमन पुर जायबसे प्रीतिकरके पुत्र १ शीतल तिनके पुत्र २ शिवनाथ १ शिवलाल २ डोमनपुरसे निकसिके बाँधामें जाय बसे। मतिरामके पुत्र ३ लाला १ जयन २ नाथूराम ३ लाला राशि बैठे गंगारामकी देवी छिन्नमस्ताके उपासिक रहे जयन वा नाथू राम फतूहासे निकसिके डोमनपुरमें जाय बसे। गङ्गारामके पुत्र ३ लाला १ बलभद्र २ शिमाकर ३ लालाके पुत्र फतूहाबादसे निकसिकर कासी जाय बसे फतूहाबादहीके नामसे प्रसिद्ध हैं लालाके

पुत्र २ दामोदर १ सुवंश २ दामोदरके पुत्र २ मन-मोहन १ कारमीसें रहे २ परमेश्वर कारमीसे नि-कसिकै उत्तर पीर नगरमें जाय वसे ॥ वलभद्रके पुत्र ४ प्रद्युम्न १ वलदेव २ चोकाई ३ मोहन ४ प्र-द्युम्नके पुत्र १ गिरधारी तिनके पुत्र ४ कृष्णनाथ १ विश्वनाथ २ सविताताथ ३ सिद्धीलाल ए सब फ-रुखावाद हीके नामसे प्रसिद्ध हैं दिमाकरके पुत्र ३ लल्ला १ माई २ कृष्णी ३ फरुखावादसे निकसि कर छोमनपुरमें जाय वसे लल्लाके वंसमें सालिकराम बड़े प्रतापी भए नरवलमें जाय वसे माई कृष्णी छो-मनपुके सांकृत गोत्र शुकुल नमेल पुरनियां वाले सर्व हैं ॥

॥ सांकृत गोत्र शुक्लोंका असामी स्थान विश्वा लिख्यते ॥

असामी	स्थान	विश्वा
ईश्वरके	असनीके	१९
मधुराम	असनी गिगासोंके	१९
हरिब्रह्मके	असोहैके	२०
गणपति	कतूंहाके	२०
गङ्गारामके	कतूंहाके	२०
गङ्गारामके	डोमनपुरके	२०
सोमग्रामके	नरवलके	२०
घना बुजरूक	बिकोसीके	१८
प्रजापतिके	शुक्ल मिश्र छटाएके	१५
छोपके	पुरैनियां बाहरके	१५
आनन्दके	अकबरपुरके	१५
मुक्ताके	पुरैनिया भीतरके	१५
बहेरु	रमचकाके	१०
वेणीके	गहिरीके	५
वेणीके	अवावाके	५
वेणीके	गोथाके	५
माधोके	अमहाके	५

माधोके	छूटावाके	५
माधोके	कुंवरपुरके	५
माधोके	गऊहंथेके	५
बेणीके	बहिरीके	५
रूपनके	छूंटावाके	५

॥ सांकृत गोत्र मिश्रोंका असामी स्थान विश्वा लि० ॥

असामी	स्थान	विश्वा
वीरके	जाजमऊके	२०
बनवारी	चसेड़ीके	१५
कौशिकी	कौशिकीके	५
अवस्थी कौसिकी	त्रिगुणापतिके	५
दुबे	बिजौलीके	५

॥ इति सांकृत गोत्र त्रिप्रवरा ॥

उपमन्यु ऋषि।

॥ अथ उपमन्यु, गोत्रका हाल वर्णन करते हैं ॥

॥ श्री कन्याया अरः सुरा सुर नर व्याल प्रवाल स्तुतो। पक्षैर्गिरि वरैः खगैर्वन चरैर्षः साधुभिः किन्नरैः नारी भिर्मुनिभिः ग्रहैन्द्र पवनैर्व्यादिभिः गांडितै तंबागीस महं मजेजग दिदंयस्माद्धि सम्बधंते १॥ धातुः पुत्रो वशिष्ठो रविकुल सुखदो मांननीयो नरेन्द्रै विश्वामित्रः सकासाल्लित तप विदितं ब्राह्मणत्वं द्विजेज्यम्। लेभे शुद्धोवसिष्टः क्षिति तल विदितो सारसारार्थं विज्ञो रामार्थं जो विशालं मुनि जन हितं दयो वासिष्ट माह ॥२॥

ब्रह्माके पुत्र वशिष्ट तिनके पुत्र शक्ति शतभाई तिन
को दिवोदास नामका राक्षस खा गया शक्तिके पुत्र
पराशर तिनके उपमन्यु तेहो वंशमें बहुत पुश्त पीछे
भूपा नामके पुत्र भए विधुप्रमद पितासे कुजहुत
ग्राम दिखायज्ञ किया तबसे भूपा दीक्षित भए तिनके
पुत्र ५ देवराम १ नभज २ चन्द्र ३ गोपी ४ गासल
५ देवराम जाजमऊमें बसि दुइवेदके पढ़नेसे दुवेदी
बाजे तेइ दुबे कहाए देवरामके पुत्र ४ अभय १ हर्ष
राम २ बीर ३ विश्वम्भर ४ बीरके पुत्र २ घरोस १
वासुदेव १ घरोस बसि इटावामेंतेऊ दुवेद पढ़नेसे
दुबे कहाए तिनके पुत्र बालू तिनके पुत्र २ शिरो-
मणि १ घनस्याम २ अभयके पुत्र २ मकरन्द १
जनार्दन २ जगत जनार्दनके पुत्र रेव तिनने रेवारी
बसाई उसीमें यज्ञ किया तिससे रेवारीके अग्निहोत्री
कहाए मकरन्द बसि भोजपुरमें ते भोजपुरके कहाए
जगत्‌के पुत्र ३ शिव १ संभू २ सङ्कर ३ ऊ तीनउ
आय केसरिमऊ बसि केसरीमऊके दुवेद पढ़नेसे दुवे
कहाए बामदेवके पुत्र ६ देवराम १ जनाकर २
नागेश्वर ३ दामोदर ४ गङ्गाराम ५ हर्षराम ६ भूप
का पुत्र चन्द्र बेसवारे जाय बसे उन्ह पुत्र बाल्मीक
भया उन यज्ञ किया तबसे बाल्मीकी दिक्षित

कहाए भूपका तनय नभज्जसे नरोतम पुरमें बसे दुइवेदको पढ़नेसे नरोतमपुरके दुवे कहाए नभज्ज के पुत्र २ स्याम १ दाम २।

दामके वंसमे जगन्नाथ चिलौलीसे निकसिके चन्दनपुरमें बसे यहां यज्ञ किया यज्ञ पूर्ण नहीं भया तबसे आधे अपनेको बाजपेई चन्दनपुरके कहते हैं आधे दुवे चिलौलीके कहते हैं।

दाम नरोतमपुरसे चिलौलीमे बसे तौ चिलौलीके दूवे कहाए घरोसके नाती घन-स्याम तिनके पुत्र ३ जनक १ मङ्गल २ सालिक ३ सगामके ग्रेहसे जनक नरोतमपुरमें बसे तेहिते होके कहाए मङ्गल पसिमामें बसे ते पसिमाके दुवे कहाए शालिककेपुत्र कवितांडव असनीमें बसे दुइ वेद पढ़नेसे कवितांडवके दुवे कहाए भूपके जे गोसल रहैं तिनके पुत्र २ जान १ हरदत्त २ जानने जानापुर वसाया तहां बेद शास्त्र को पढ़ाए ते जानापुरके पाठक कहाए भूपके नाती हरिदत्त तिनके पुत्र २ हरी १ धर्म्म २ एज पाठक कहाये जानाके पुत्र ४ शिवदत्त १ यज्ञदत्त २ देव-दत्त ३ ब्रह्मदत्त ४ शिवदत्तके पुत्र ४ राम १ कान्ह २ दयाल ३ शङ्कर ४ देवदत्त यज्ञ डलामें यज्ञ किया

सेहिते यकडलाके अग्नि होत्री कहाए देवदत्तके पुत्र ३ जया १ कन्दन २ भैरव दरियाबादमें वसे ते दरियाबादी अग्नि होत्री कहाए जवनके दुवे पसेमाके भए तिनके भेद २ कपर्द्द थलई तिनके दीक्षित भये कपर्द्दके दुवे भये कन्दनके पुत्र २ देवराम १ काला २ देवराम जराजमऊके दुवे भये काला नरोत्तमपुरके दुवे भये ब्रह्मदत्तके पुत्र ५ पुरन्दर १ राम निधि २ कन्हई ३ परशुराम ४ दीनानाथ ५ राम निधिके पुत्र ४ मण्डन १ सुन्दर २ प्रयाग ३ साहेब प्रयागके पुत्र २ रघुनाथ १ हरी २ प्रयागकी दूसरी स्त्रीसे पुत्र भा वादे हरीके पुत्र ६ श्याम १ वदाम २ हीरा ३ माणिक ४ पुरंदर ५ आत्माराम ६ येते हरीकी असामी हैं रामनिधिके वंसमें तीनि भेद पढ़े ते हरी आदि येसब येकडलाके त्रिवेदी कहाये परशुरामके पुत्र ५ पहिली स्त्रीसे दूसरीके वंस नही भया बड़े १ गोपाल २ माधू ३ प्रभाकर ४ दामोदर ५ पांचो भाइ त्योरासीके अवस्थी भए बड़ेके पुत्र ४ जयदेव १ देवीदत्त २ भोलानाथ ३ रामप्रसाद ४ गोपालके पुत्र १ मकरन्द माधूके पुत्र ३ वाबू १ संभू २ मनीराम त्योरासीते निकसिके असनी वा कटरामें जाय वसे और कुछ अलीपुरमें भी

बसे हैं प्रभाकरके पुत्र ७ नारायण १ रमई २ हरी-कृष्ण ३ जगत ४ मुरारि ५ धरणीधर ६ इन्द्रमणि ७ आजले अपने नामहींसे प्रसिद्ध हैं अरु इन्द्रमणिके पुत्र ३ उदयनाथ १ प्रेमनाथ २ थानेश्वर ३ उदय-नाथके पुत्र ३ सन्तोषी १ निरञ्जन २ शारङ्ग-धर ३ इहाँ तक च्योरासीके अवस्थी जानो जानाके पुत्र ब्रह्मदत्त तिनके पुत्र ८ कन्हई १ मधुकर २ धन्नो गुलाबी ४ नरहरि ५ मल्ल ६ बाल ७ सुरेस ८ नवम सूर्य्य ८ येते अष्ठ भैया अवस्थी ब्रह्मदत्तके वाहाए यज्ञदत्त विद्वान भये तिनके पुत्र ५ बिष्णु शर्म १ देवशर्म २ महाशर्म ३ शिवशर्म ४ लक्ष्मीनारायण ५ बिश्नुशर्मके पुत्र भे ओझा तिनके पुत्र छंगे तिनके पुत्र २ रामभद्र १ प्रीतिकर २ रामभद्रके पुत्र २ कमलनयन १ जयकृष्ण ये दोनों भाई रामभद्रके नामसे प्रसिद्ध हैं प्रीतिकरके पुत्र भे ४ रामचन्द्र १ बेणीदत २ नरहरि ३ पीताम्बर ४ पीताम्बरके पुत्र केशो भये केशोके नामसे प्रसिद्ध है और नरहरिके पुत्र नरहरिके नामसे प्रसिद्ध हैं॥

बेणीदत्तके पुत्र बेणीदत्तहींके नामसे प्रसिद्ध हैं रामचन्द्रके पुत्र ४ हरिनारायण १ धर्म्मनारायण २ बिश्वनाथ ३ धूरे ४ हरीनारायणके पुत्र २ मेदी १

धकाया २ प्रीतिकर हुआ अवस्थामें थेक अपना विवाहमें असम्बन्धसें करि लिया तब पुत्र चारी वा भाई घरमें नहीं आवने दिया तब आयके खालीघा रहे तिहि स्त्रीके पुत्र सन्यासीके वरदानसे बड़ा प्रतापी विद्वान बुद्धिराम नामका पैदा भया तिसके पुत्र भे ३ भीखू १ सङ्कर २ मनोराम ३ भीखूके पुत्र २ वन्सीधर १ नन्दकिसोर भीखूके नामसे प्रसिद्ध हैं शङ्करके पुत्र ३ टीका १ चूरा २ देवीदत्त ३ मनोरामके पुत्र सुखा १ बहोरन २ ई दोनों मनोरामके नामसे प्रसिद्ध है और टीका चूड़ा दोनों जनै बड़े पण्डित भये अपने नामहीं से प्रसिद्ध हैं॥

चूड़ाके पुत्र ३, सुखलाल १, हरीलाल २, हरगोविन्द ३। सुखलालके पुत्र ३, लालमन १, (इनके वंश लखनऊमें हैं) मोहनलाल २ (इनके वंश पुराने कानपुरमें हैं) काशीनाथ ३ (इनके वंश लखनऊ, मंन्द्रासन, पटनमें हैं) यह खालेके वाजपेई का व्योरा है।

देवशर्मके पुत्र ३ दत्ती १ मत्ती २ लत्ती ३ दत्ती बसे कुडरीमें मत्ती बसे रम्पुरामें लत्ती बसे दिवरईमें येऊ लखनऊकी नामसे प्रसिद्ध हैं शिवसर्मके पुत्र ३ रमन्ना १ सुन्दर २ गङ्गा ३ ई पुरवामें बसे अपनेको लखनऊकी नामसे प्रसिद्ध करते हैं लखनऊके पुरवा

वाले प्रसिद्ध हैं महाशर्मके पुत्र ३ तिर्मल १ कश्यप २ कुलमणि ३ तिर्मल बसे खटोलामें तो खटोलहा कहाये तिनके पुत्र ३ रजोगुण १ सतोगुण २ तमोगुण ३ जल्दी शांत होतरहे तिहिते तिर्मलकी कहाये कुलमणिके पुत्र ५ काशीराम १ मनोराम २ मथुरा ३ गोपी ४ ललकार ५ काशीराम चिलौलामें गङ्गा तटमें यज्ञ किय। तिनके पुत्र ५ गङ्गाराम १ चूड़ा२ पट्टू ३ शिवदीन ४ रघुनाथ ५ चूड़ाके पुत्र ३ शिवनन्दन १ सिउनी २ दमा ३ पट्टूके पुत्र ३ लछी १ बछी २ जादौ ३ शिवदीनके पुत्र २ धूसर १ प्राणनाथ २ येसब काशीरामहोंके नामसे प्रसिद्ध हैं असदा वा गोपालपुर वा चिलौलामें बस्ते हैं मनोरामके स्त्री २ पहिली स्त्रीसे पुत्र ३ लाले १ बालेका मनोरथ ३ लाले बाले मनोरामहोंके प्रसिद्ध हैं मनोरथ मनोरामके भौजिहा प्रसिद्ध हैं चिलौलामें यज्ञ किया मनोरामकी प्रथम स्त्री नारहीं तब बालेका भी देहान्त भया तबमनोरथने बालेकी स्त्रीको ग्रहण कर लिया तब मनोराम तीर्थयात्राको गये वहां पर मनोरामने यज्ञ कराया भदावरके राजाके यहां तब वटेश्वरमें जाय कर सनाढ्य ब्राह्मणकी कन्यासे बिवाह किया तिही दूसरी स्त्रीके पुत्र २

नित्यानन्द १ महामुनि २ नित्यानन्दके पुत्र २ रामदेव १ कामदेव २ महामुनिके पुत्र ५ लाले १ घनस्याम चन्द ३ आनन्दघन ४ माधोराम ५ एते बटेश्वरके वाजपेई कहाये लक्ष्मीनरायनके पुत्र कृष्ण तिनके स्त्री ३ पहिली स्त्रीके बंस नहीं दूसरी स्त्रीके पुत्र १ पीथा लहुरी स्त्रीके पुत्र ४ हीरा १ बीसा धन्नी ३ तारा ४ पीथाके पुत्र १ जगन्नाथ बाजेईपुर में बसे हीराके पुत्र ४ चत्तश्रेष्ठ १ मलसमान २ बीरेकबंशनहीं ३ भगोले बैहारमें बसे एतेअसनीके कहाए चत्तेके पुत्र २ मुरलीधर १ परशुराम २ ते असनीके भए बीसाके पुत्र ४ उवींधर असनीके केशवराम असनीके कमलनयन मोरहावाले गया-दत्त प्रभृतिके भए कमलनयनके पुत्र १ परमेश मोरहामें बसे धन्नीके पुत्र ४ उदयनाथ १ गिरधर २ मुसई ३ भावनाथ ४ नारेपारके एते मोजमा बादी भए ॥

यहां तक वाजपेई का वृतान्त जानो।

उपमन्यु गोत्र बाजपेईयोंका असामी स्थान बिस्वा लिख्यते ॥

असामी	स्थान	बिस्वा
रामभद्रके	ऊंचेलखनऊके	२०
रामचन्द्रके	ऊंचे लखनऊके	२०
बेणीदत्तके	ऊंचे लखनऊके	१९
नरहरिके	ऊंचे लखनऊके	१८
केशोके	ऊंचे लखनऊके	१८
बुधशर्म्मके	खालेनखलऊके	२०
देवशर्म्मके	लखनऊसे कुड़री रम्पुरा दिवरईमें बसे	१८
शिवशर्म्माके	लखनऊसे पुरवा बसे	१८
घीथाके	असनीसे बाजपेईपुर बसे	१८
हीराके	असनीके	२०
बीसाके	असनीके	२०
धर्म्मीके	असनीसे मौजमा बादमें बसे	१९
ताराके	असनीसे हाजीपुर बसे	१७
नित्यानन्द महामुनि	बटेश्वर बसे	१९
निर्म्मलके	घटोमपुरावाले	१५

मनीरामके	चिलौलाके	१५
मनीरामके मनोरथ	चिलौलावाले भौजिद्दा	१३
काशीरामके	चिलौलाके	१५
गोपीरामके	गोपालपुरके	१३
मथुराके	गोपालपुरके	१३
जगन्नाथके	चन्दनपुरके	५

उपमन्यु गोत्र त्रिवेदियोंका असामी स्थान विश्वा लिखते ॥

असामी	स्थान	विश्वा
हरीके	एकडलाके	१६
रघुनाथके	,,	१३
प्रयागके	,,	१३
मण्डनके	,,	१२
साहेबके	,,	१०
बादेके	,,	१०

उपमन्यु गोत्र दुबौंका असामी स्थान विश्वा लिखते ॥

असामी	स्थान	विश्वा
चन्द्र घनस्यामके	घरवाससे छुटाए जाय बसे	२०

मनञ्ज घरवाससे	नरोत्तमपुर बसे	१५
घरवासके	झुटांयेवाले	१८
कबिताराडवके	असनीसे किसुनपुर	१५
कबिताराडवके	असनीके	१८
मंगलके	पसेमावाले	७
पसेमाके	अभईके	७
जवनके	पसेमाके	८
देवरामके	जराजमञ्जके	५
कलाके	नरोत्तमपुरके	८
शिव संकरके	कैसरि मञ्जके	८
वालदेवके	कैसरि मञ्जके	१२
सम्भूके	वालूके कहाए	१२
जगन्नथके	चिलौलीके	५
श्यामनरोत्तमपुरसे	भैंसईके	६
वसही	भैंउईके कहाए	४
मंहगूके	बरुवाके	४
रूपईके	भैंसईके	४
वाबूके	भैंसईके	१०
जगनके	भैंसईके	७
मकरन्दके विलवार	भोजपुर गंगापारके	५

चन्द्रके विलग्रार	घरौमग्रामके	५
उन्नैयां	उन्नाविके	१

उपमन्यु गोत्र दीक्षितोंका असामी स्थान

वष्वा लिखते।

असामी	स्थान	विष्वा
शलङ्के	पाहुवाले	१०
बालमीकके	दरियाबादी	१०
बाल्मीकक	खेउराबाले	१०
परिअर	अमनौ से बिलबार	५

उपमन्यु गोत्र अवस्थियोंका असामी स्थान

विष्वा लिखते।

असामी	स्थान	विष्व
माधूके	त्योरासीसे कटारावसे;	२०
प्रभाकरके	त्योरासीवाले	२०
वेड़के	त्योरासीवाले	१७
गोपालके	त्योरासीवाले	१७
परसरामके	०फडलावाले	१०
ब्रह्मदत्तके	अठभइयाके	१०

देवऋषिके	सरवनके	१०
सिद्धिनाथके	दरियाबादी	१०
दीननाथ	एकडलाके	१०
कन्हई के	गोराके	१०
कुंवणाके	अठभैयामौराके	१०
पुरन्दरके दासीपुत्र	एकडलाके	१०
जगनवंशी औमीके	चौधरी	५
जगनवंशी बगुलाके	बिलौरावाले	५
जगनवंशी छूटांकि	बिलौरावाले	५

उपमन्यु गोत्र पाठकोंका असामी स्थान
बिश्वा लिखते।

असामी	स्थान	बिश्वा
शिवदत्तके	अगई भए	१०
सैढ़ूपुरके	सैढ़ूपुरके भये	१०
जानाके	जानापुरीके	५
जानापुरीते	मौराएके	८
मौराएते	साहावदी	५
हरदत्तके	बेतुवामिजाके	५
बेतुवामिजाते	नसुराके	५

उपमन्यु गोत्र अग्निहोत्रियोंका असामीस्थान बिश्वा लिखते ।

असामी	स्थान	बिश्वा
कन्दरके	दरियाबादी	१०
चन्दके	उज्जैनके	१०
जनार्द्दके	रिवाड़ीके	१०
देवदत्तके	एकडलाके	१०
मलिकरके	कगूके	१०

उपमन्यु गोत्र मिश्रोंका असामी स्थान बिश्वा लिखते ।

असामी	स्थान	बिश्वा
बैथाके	लखपूराके	५
लंकाडाही	कपडुलिया	५
सखरिया	गुर्दवानके	५
संगितावम	कीमरीके	५
यमराज	दरियाबादी	५

इति उपमन्यु गोत्र त्रिप्रवरा: ।

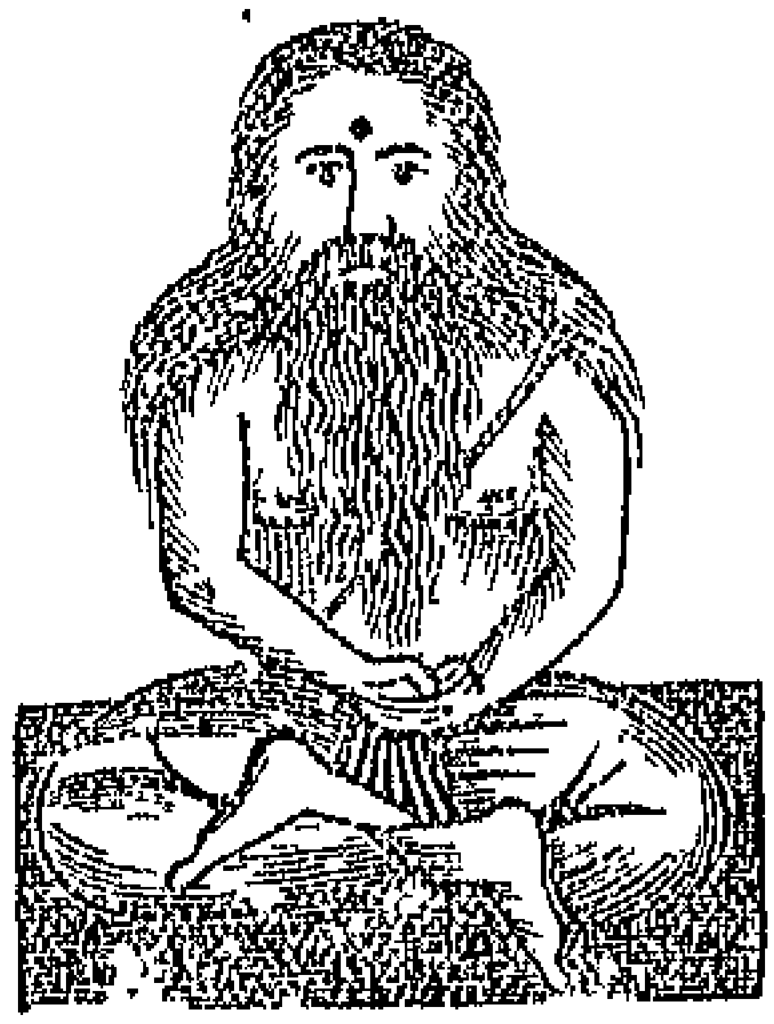

श्रीभरद्वाज ऋषी।

अथ भारद्वाजका शाख वर्णन करते हैं।

दधिप्रियं रमाकांत गोवर्धनादि श्वरं परम् भरद्वाज कुलोत्पति: प्रणम्य ब्रवतेऽधुना ॥ १ ॥

ब्रह्माके पुत्र अंगिरा तिनके पुत्र ब्रहस्पति तिनके भारद्वाज तिनके द्रोणाचार्य्य तिनके अश्वत्थामा तिनके और्व तिनके प्रधान तिनके अनल तिनके मान्द तिनके शांत तिनके ब्रह्मण तिनके तृण तिनके काशीवान तिनके कोश तिनके वाल तिनके वंशमें भए३ो पुत्र सत्याधर १ वामदेव २

वामदेवके पांडेभए सत्याधरके शुक्लभए सत्या धरके पुत्र भयेमधुकार तिनके पुत्र भये २ श्याम १ लाल २ स्यामके पुत्र भये ५ धन्नी १ मन्नी २ प्रसाद ३ मान् ४ चलन ५ लाल के पुत्र ५ प्रयाग १ बाल २ नन्दन ३ बन्दन ४ शरणा ५ धन्नीके पुत्र ऊंच मन्नाके पुत्र खरे मानके पुत्र महाले प्रमादके पत्र भायस चलनके पुत्र पुरेका प्रयागके पुत्र नवधन बालके पुत्र बौगे नंदनके तरणा बंदनके चन्द्र शरणाके गुदरास ईदशभाई दशग्राम बसाए॥ दसभाइयोंके नाम॥ खरौली१ गहरौली भैमई४ पुरवा५ नवांव६ बिगहपुर७ तरौ८ चन्दन-पुर ८ गूदरपुर १० ऊंचेगांवमें ऊंचेसे पुत्र२ शंकर१ मंगुल२ मंगलके अधुर्य्य भए शंकरके सिवारी तीन बेद पढ़ते कहाए खरे बसाई खरौली भायस बसाईभे सईत भैंमईके कहाए गहोले गहरोली बसाइते गहरोलीके कहाए पुरऊ पुरवा के कहाय नौध ननबाये के कहाये बौगे बिगह पुरके कहाए चन्द्र चन्द्रपुरके कहाए तरणा तरौके कहाए गुदरास गूदरपुरके कहार यही दश-ग्रामवासी पृथक २ नामसे शुक्ल कहाए चंद्रके

पुत्र २ मान १ कुमनई २ मान चौंसापुर बासवा अरुसास्त्र पढ़ा तिहिते चौंसापुरी पाठक कहाए कुमनईके पुत्र २ सूर्य्य १ गोपी २ सूर्य्यके पुत्र ४ रामनाथ १ गैड़े २ नारायण ३ जैयदेव ४ रामनाथ बसे सिक-ठियामें ते उहादेके शुक्ल कहाए। नारायण बसे गलहथे ते उहांईके शुक्ल कहाए। गैंड़ गौडहा शुक्ल कहाए। जयदेव बसे महोलीमें तेमहोली के शुक्ल कहाए। नारायणके पुत्र १ बाबू तिनके पुत्र ३ छगे१ कैशौ२ पसही३ छगेके पुत्र७ यदुराई१ कमलापति२ लोकनाथ ३ मकरन्द४ पीताम्बर ५ दूलम ६ देवशर्म्मा एसब गलहथेके कहाए यदुराई गलहथेसे निकसि के मुरादाबादमें बसे कमला-पति निकसिके भागूरेवरे पंचघराके नामसे प्रसिद्ध हैं केशौ पुत्र १ टेढ़ाके कहाए केशौ-हीके नामसे प्रसिद्ध हैं पसहीके वंशनाहीं भया गोपीके पुत्र५ होल१ हरिदास२ नगई३ काश्यप४ भानु५ तिनके पुत्र २ मंकगू१ पटोरे २ इदोनो भाई राशि वैठेमिश्रोंके तेहिते मिश्रभए तब भानुके पुत्र नहीं रहा भानुकी स्त्रीने चौंसाके

पाठकको रासि बैठाया ते भानुके शुक्ल कहाए होलके पुत्र २ रूद्री १ भैरो २ रुद्रीके पुत्र ३ तिलक १ बनवारी २ लालमणि ३ तिलक अपने नाम होंसे प्रसिद्ध हैं तीनो भाई उन्नन पुरमें बसे तिलक वनवारी अपने नामसे प्रसिद्ध है अन्तर वेदमें और जेंगगा पारमें उत्तरमेहैं ते अपनाको बालाके नामसे प्रसिद्ध करते हैं लालमणिके पुत्र २ बाला १ बागीम२ बागीस न्याय शास्त्रपढ़ा तबसे न्याय बागीसके कन्नौजके भट्टाचार्य कहाए बालाके पुत्र३ नन्दराम १ बीरेश्वर २ नेवाज ३ नेवाजके वावंश नाही नन्दरामबसे सकूराबाद ते सकूराबादी कहाए बीरेश्वर बसे हफ़ीजाबादते हफ़ीजाबादी कहाए नन्दरामके स्त्री २ पहिलीसे पुत्र३ अमरनाथ१ विश्व नाथ २ गौरीनाथ ३ दूसरी स्त्रीसे पुत्र २ हरिशङ्कर१ चक्रपाणि २ ये पांचोभाइ शुक्ल शकूराबादी कहाये अपने अपने नामसे प्रसिद्ध हैं बीरश्वरके पुत्र ५ रघुबीर १ यदुबीर २ गयादत्त ३ काशीदत्त ४ शिव दत्त ५ रघुबीरके पुत्र ५ देवीदास १ हरेलाल २ खेमकरण ३ लोकनाथ ४ देवशर्म ५ हफ़ीजाबादी कहाए बाला के काशीदत्तके बंशमें चन्द्रका आंक

श्रेष्ठ है देवीदास कपीजावादीका आंक श्रेष्ठ है और जो जवनपुरमें व्याहे वे तनक मध्यम हैं राम-चरण सकूरावादीका आंक श्रेष्ठ है और जो कन्नौज में लिया हैं वे तनक मध्यम हैं हरिदास के पुत्र २ माणिक १ चन्द्रमणि २ चन्द्रमणिके पुत्र २ बलन १ मधुसुदन २ बलनके पुत्र ४ हरिसंकर१ अनन्तराम २ मधुराम ३ दुर्गादास ४ एचारो भाई भैसई के कहाए तिसमें दुर्गादास के श्रेष्ठ हैं मधुसुदन के पुत्र २ अनिरुद्ध १ भीम २ भीम के पुत्र २ उमा १ धन्नी २ अनिरुद्ध के पुत्र २ जगन्नाथ १ रघुनाथ २ रघुनाथके पुत्र १ मणीयेका ये अपने नामहीसे प्रसिद्ध हैं जगन्नाथ के पुत्र २ हरी १ पेकू २ पेकूके पुत्र ४ चतुर्भुज १ विश्वनाथ २ बेणीराम ३ लछीराम ४ निवई जायबसे चतुर्भुजके पुत्र २ देवी १ गुलाल २ बदरकाबसे माणिक के पुत्र ४ व्योमणि १ हरिहर २ कल्याण ३ आदिराम ४ येते पाटनबसे ते पाटन के नामसे प्रसिद्ध हैं हरीके पुत्र ३ कमनी १ पुरषोतम २ घनस्याम ३ कमनीके पुत्र २ ललजू १ कल्याण २ सातनपुरवा जायबसे घनस्यामके पुत्र १ इन्द्रमणि नेवादा जायबसे पुरषोतमके पुत्र २ रजने १ मोहन २ रजनेके पुत्र ४ सादेव १ सावन २ नित्यानन्द ३

राम ४ डूंगरखावमें खवद्दहा कहाये मोहनके पुत्र ३ मुरलीधर १ महामुनि २ रेवतीपति ३ निबई बसे तिहवारिहा कहाये नगईके पुत्र नगईके नामसे प्रसिद्ध हैं काश्यपकी स्त्री २ पहलीके पुत्र ३ भीदत्त १ भास्कर २ मकरन्द ३ मकरन्दके अपने नामहीसे प्रसिद्ध हैं दूसरी स्त्रीके पुत्र १ खौदहा १ काश्यपकी नामसे प्रसिद्ध हैं भीदत्तकेपुत्र ५ दिवाकर १ विसईर चन्द्राकर ३ नरायण ४ जगन्नाथ ५ भास्कर के काश्यपहीके नामसे प्रसिद्ध हैं तरी गूदरपुर सत्यगांव पचारो समान हैं नवांयेते सत्यके शुक्ल भये सो सत्य के शुक्ल कहाये।

इहांताई भरद्वाज गोत्र शुक्लोंका हाल कहा।

अब भारद्वाज गोत्र पांड़ेनका हाल वर्णन करताहूं।

वामदेव पांड़ेके पुत्र गुणाकर तिनके दश स्थान भये गुणाकरके पुत्र जयदेव बंशथीमें बसे जयदेवके पुत्र ३ भोजराज १ रामनाथ २ लाला ३ लाला गौरा में बसे तिहिते गौराके पांड़े कहाए भोजराज बसे कंपिला ते कंपिलाके पांड़े कहाए रामनाथ बसे पटियारी तिनके पुत्र ४ मान १ कृष्णागर २ शेषनाथ ३ कुठमन ४ तीन भाई पटियारी में रहे एते पटियारोके कहाए शेषनाथ पटियारी से डौंडिया खेरेमें

बसे डोंडिया खेरेके कहाये भोजराजके पुत्र १ राम चन्द्र तिनके पुत्र २ चन्दन १ बन्दन २ बन्दनके पुत्र २ पूजी १ भैरव २ दोनों जने बसे असनीमें भयरव असनी से निकसिके लखनऊ जाय बसे ते लखनऊ के पांड़े कहाये भयरवके पुत्र ३ प्राणमणि १ परम हंस १ जगदीश ३ प्राणमणि के पुत्र २ रामेश्वर १ उद्धरणि २ उद्धरणि के अपने नामही से प्रसिद्ध हैं प्रवन्हा कहाये रामेश्वर नदिया शांतीपुर में जाय कै शास्त्रार्थ किया विजय पाया भट्टाचार्य्य पद पाया तबसे भट्टाचार्य्य कहाये तिनके पुत्र १ गोपीकान्त १ तिनके पुत्र ७ वंशीधर १ मुरलीधर २ मतिकृष्ण ३ शिरोमणि ४ चन्द्रमौली ५ कमलापति ६ श्रीपति ७ जगदीश बसे अमरा ते अमराके पांडे कहाये तिनके पुत्र ४ लाले १ राम २ वीरे ३ जीवन ४ लालेके पुत्र २ लाल १ वीरभद्र २ लालके पुत्र बिलासपुर में बसे ते बिलासापुरके पांडे कहाये परमहंस लखनऊ से निकसिके भीषमपुर जाय बसे तिनके पुत्र २ जगजीवन १ शरम २ जगजीवन रहे भीषमपुरमें ते भीषमपुर के कहाए शरम भीषमपुर से निकसि कै लक्ष्मीपुर जाय बसे ते लक्ष्मीपुर के कहाए मान बसे वैजामें तिन्हिते वैजाके पांडे कहाये कृष्णागरके पुत्र

बसे छटौंजेमें ते छटौंजेकी पांडे कहाये शेषनाथके पुत्र शक्ति ते शक्तिहा पांडे कहाये ज्ञानवान हैं सो इनकी पहितिहा कहते वो पांडे मूर्ख हैं जो अपना को पहितिहाकी नामसे प्रख्यात करते हैं और शेष-नाथ की दूसरी स्त्रीसे पुत्र ३ कांठ १ लाला २ बाला ३ ऐऊ पटियारीमें रहे त पटियारीके पांड़े कहाए।

पूजी पांडे का ब्यवरा।

पूजीके पुत्र २ दयाल १ परमू २ दयाल बसे असनीकी गलीमें गलीका नाम खोरि है तिहि से खोरिके कहाए परमू बसे गिगासों में तिहि से गिगासोंके पांड़े कहाए दयालके पुत्र ५ गजाधर १ भास्कर २ लाले ३ बालू ४ भूरे ५ गजाधर विबाहि रहे पठकनके सो अपने भाईका पुत्र गोद लिया तिहिते ओंड़रे की संज्ञा पाई भास्कर के पुत्र २ कमलापति १ कान्हर २ कान्हरके कन-उजमें बसे कमलापतिके पुत्र १ मनोराम बसे तुलीपार तिहिते तुलीपारके कहाए लालके पुत्र ५ राम १ गंगू२ कांत३ मान ४ समन ५ ये सब लाल की असामीसे प्रसिद्ध हैं रामके पुत्र नरोत्तम १ अपने नामही से प्रसिद्ध हैं गंगू अपने नामही से प्रसिद्ध हैं बालूके अपने नामहीसे प्रसिद्ध हैं भूरेके भो

अपने नामही से प्रसिद्ध हैं॥ इहां ताईं खोरि के पांड़ेन कहाए॥ परसूके पुत्र ३ हरिकृष्ण १ घनश्याम २ हरिनारायण ३ हरिकृष्णके पुत्र १ कुलमणि तिनके पुत्र वीरेश्वर घनश्यामके पुत्र २ हरिनाथ १ मनोराम २ हरिनाथके हारनाथके नामसे प्रसिद्ध हैं मनोरामके मनोरामके नामसे प्रसिद्ध हैं हरिनारायणके पुत्र २ गंगाराम १ गिरधर २ गंगारामके पुत्र ६ गुलाब १ रघुनाथ २ विश्वनाथ ३ काशीनाथ ४ सर्वो ५ सन्तोषी ६ पांचजने गंगारामहीके नामसे प्रसिद्ध हैं काशीनाथके पुत्र २ सीतल१ श्रीकृष्ण २ नन्दकिसोर ३ शीतलके पुत्र ४ भान १ भान २ परमसुख ३ दास ४ ई चारोभाय शीतलकी नामसे प्रसिद्ध हैं श्रीकृष्णके अपने नामहीसे प्रसिद्ध हैं नन्दकिशोरके भी अपने नामहीसे प्रसिद्ध हैं। इहांताइ गिगासोंके पाँड़ेन का व्योरा समाप्त हुआ।

भारद्वाज गोत्र त्रिवेदी नवाँयेके शुक्ल तफरीके तीनमदू।

नवाँयेते त्रिवेदीभए नवधनके पुत्र ३ अजय १ नल २ घटम ३ नलके पुत्र ७ देवमणि १ मदन २ नितई ३ चतन् ४ देवपति ५ ठाकुर ६ चतुरी ७

एते नवांएके शुक्ल कहाए चतन्के पुत्र ३ पैकू १ ध्योमणि २ कुरपति ३ ई तीन उनवाँयेके बड़ावगा भए अजयके पुत्र २ अंबर १ कान्ह २ अम्बरके भटपुरके शुक्ल भए कान्हके त्रिवेदी भये कान्हके स्त्री २ लहुरी स्त्रीसे पुत्र ६ हरि १ प्रभाकर २ घनाकर ३ मनिनिकण्ठ ४ बिमान ५ पद्मधर ६ हरि प्रभाकर शुक्ल असनीके भये घनाकर नव्वाए में रहते नवांएके शुक्लभये मणिकंठ बिमान पद्मधर एते त्रिवेदी लहुरीके भए जेठी स्त्रीके पुत्र २ बासुदेव १ भोलि २ एते जेठीके त्रिवेदी भए पद्मधरके पुत्र ३ कालिकादास १ वेणी २ मंन्हा ३ एते लहरीके त्रिवेदी कहाए घटमके पुत्र १ भागीरथ तिनके पुत्र ५१२यमादालन्ताच माधोराम ३ रन्त ४ हीरा ५ चिन्ता दयालवसे साठ में साढ़के त्रिवेदी कहाए माधोराम हाजी पुरवसे हाजीपुरके त्रिवेदी कहाए रमन्त बैतेहारिके त्रिवेदी कहाए हीराबसे घांटम्पुरते घाटम्पुरके त्रिवेदी भए ठाकुर बसे नवाँवनगरमें ते नवाँयेके शुक्ल भए ठाकुरके पुत्र ३ निहोर १ नन्दन २ श्रीपति ३ तेनवावते परिआर ग्राममें बसे नन्दन नाठूपुर तथा गाड़ूमैउ में बसे निहोरेके पछाहमें तथा गिवलीमें श्रीपति पण्डित रहै ऐवाझ्लै गए

तिनके पुत्र ३ काला १ राजा २ स्याम ३ देवमणि के इच्छाम्बरी अवस्थी भए अदन पनौके तेवारी भए सथरके कोई दुबे भए कोई चौसाके पाठक भए नितईके देवप्रतिका पुत्र मधुका मिश्र भये गङ्गाके गाड़ूमेव के दीक्षित भये औदत्त के खप्रोटहा दीक्षित भये कोई हड़हा के दीक्षित भये कोई डोडिया देवरेके दीक्षित भये।

भारद्वाज गोत्र शुक्लोंका असामी स्थान बिश्वा लिख्यते।

आसामी	स्थान	बिश्वा
कालाके	इफोजाबादी	२०
कालाके	सकूराबादी	१९
न्यायवागीसके	कन्नौजके	१८
तिलकके	उदग्निपुरके	१६
बनवारीके	उदग्निपुरके	१५
छंगेके	गालहथेके	२०
केशोके	टेढ़ाके	१९
पैकूके	बिगहपुरके	१९
हरीके	बिगहपुरके	१५

घन्नोके	बिगहपुरके	१३
उमाके	बिगहपुरके	१३
भोदत्तके	बिगहपुरके	१५
काश्यपके खोदरा के	बिगहपुरके	१२
काश्यपके	बिगहपुरके	१२
मकरन्दके	बिगहपुरके	१३
मनोयेकाके	बिगहपुरके	१०
नरबूके	बिगहपुरके	१०
भानुके	बिगहपुरके	१०
जगन्नाथ	गलहथेके	१०
दुर्गादासके	भैंसईके	१३
बलिरामके	भैंसईके	५
रामनाथके	सिकटियाके	१०

भारद्वाज गोत्र शुक्लोंका स्थान लिखाते ।

स्थान	विश्वा	स्थान	विश्वा
शांत्यके	५	बरवाईके	७
गदरपुरके	५	गहरौलीके	४
नयांयेके	५	बरौलीके	३
विगहुलीके	३	लखमीपुरके	२

पाटनकी	८	अरौलीकी	३
बसईकी	१०	बरसुईकी	३
मझोलीकी	१०	पुरवाकी	०
तरीकी	४	कंधगांवकी	३
भटपुरकी	२	चन्दनपुरकी	०
असईकी	४	पतिहाकी	३
मामईकी	२	दशरथकी	५
सल्थकी	४	अभयपुरकी	५

भारद्वाज गोत्र पाँड़ेनका असामी स्थान बिश्वा लिख्यते।

असामी	स्थान	बिश्वा
भूरकी	खोरि असनीकी	२०
बालूकी	खोरि असनीकी	२०
गङ्गूकी	खोरि असनीसी	२०
नरोत्तमकी	खोरि असनीकी	२०
लालेकी	खोरि असनीकी	२०
कन्हरकी	खोरि असनीकी	२०
मनीरामकी	खोरि तूलीपारकी	२०
गदाधरकी रासि वैठे	खोरकी असनीसी ठोरईकी	१८
वीरेकी	गिभासोकी सिवपुरी बसी	२०

गिरधरके	गिगासोंके	२०
गङ्गारामके	गिगासोंके	२
हरनाथके	गिगासोंके	२०
मनीरामके	गिगासोंके	२०
रामेश्वर भट्टाचार्यके	लखनऊके	१८
उदरथिके	शुलनहा लखनऊके	१७

स्थान	विश्वा	स्थान	विश्वा
वनस्थोंके	७	सवाङ्गलपुरके	१०
अमराके	१५	लखमीपुरके	५
गौराके	१२	दूसरे वैलाके	५
पटियारोंके	१०	पालीके	८
कांपिलाके	१०	पहितिहाके	८
विरसापुरके	१०	डौड़ियाखेरेके	१०
भीषमपुरके	५	मौराके	५
विंतूरिया	४	विगहपुरके	५
जहानापुरके	५	नारायणपुरके	७
वरवोंके	४	डूटोंजेके	७
वगरके	४	नौगांवके	५
वैलाके	१०	चम्पापुरके	३
धमौराके	१०	हरदासपुरके	३

मौरायेंके	१०	बनगांवके	१०
वागीसके	१०	कन्नौजके	२
मनोहके	५	नाथूपुरके	३
भुसौरके	२		

---o---

भारद्वाज गोत्र त्रिवेदियोंका असामी स्थान विश्वा लि०

असामी	स्थान	विश्वा
पद्मधर लहरीके	तोधकपुरके	१२
वासुदेव जेटीके	सुठियांयेंके	१२
चिन्तादयालके	साढ़के	१०
माधोरामके	हाजीपुरके	१०
रमन्नाके	वैहारके	१०
छरीके	घाटम्पुरके	१०

---o---

भारद्वाज गोत्र दीक्षितोंका असामीस्थान विश्वा लि०

असामी	स्थान	विश्वा
गङ्गाके	गङ्गावाले कहाए	१०
भौदत्तके	भौदत्तवाले कहाए	१०
गाडूमऊके	गाडूमऊवाले कहाए	७
घ्योटाके	घ्योटावाले कहाए	५

अग्यके	मगडै लिखा कहाये ५
अग्यके	जहानाबादी ५
डौंड़िया खेरेके	डौंडियाखेरेवाले कहाये १०
हड़हाके	हड़हावाले कहाये २

भारद्वाज गोत्र अवस्थी तेवारी दुवे पाठक
मिश्रका खाना विश्वा लि०

तिवारी ऐनिके ३	दुबे भदेश्वरी २
तिवारी बिनोरके २	दुबे उमरया २
तिवारी पुरवाके २	दुबे परासरी २
अवस्थी कुसवरीके कौ-	पाठक चौसाके १
थिकीवाले कहाये १	मिश्र सकंग पटौरेके १

इति श्री भारद्वाजकी गोत्र लिपरवरा:

॥ कुलके घर पञ्चादरि जानो ॥

जो उत्तम कर्म करते हैं वे उत्तम हैं, जो मध्यम कर्म करते हैं वे मध्यम हैं जो निकृष्ट कर्म करते हैं वे निकृष्ट धाकर हैं।

भरद्वाजे न यो विप्रः पुत्रत्वे न समीरित:
गोत्रमन्यं प्रचक्र सो भारद्वाजो प्रकीर्तित: ॥१॥

भारद्वाज जिहि ब्राह्मणके पुत्रको पुत्रत्व किया रहै तिहिके पुत्र भे कमल तिहिके भे दास तिनके पुत्र अम्बर तिहिके यज्ञ तिनके पुत्र ५ देवीदीन १ शङ्कर २ जयलाल ३ भगवान ४ लालता ५ देवीदीन मलियाबादमें जाय बसे वहां शास्त्र पढ़ा तिहते मलिहयाबादी उपाध्याय कहाये देवीदीनके पुत्र २ भानु १ नन्दन २ भानु शास्त्र पढ़केसे भानुके पाठक भये अरु सङ्कर सगुनापुरी पाठक भये जयलाल चन्द्र राजाकी यज्ञमें रहे अर्गलाके अवस्थी भये लालताके उपाध्याय पढ़नेसे नागपुरके उपाध्या भये और कोई उन्हींमें जह्नानाबादी सौतिहा भये ॥

॥ अथ शाण्डिल्य गोत्रीय ॥

शाण्डिल्यवंशमें एक कमल भये तिनके पुत्र जनार्दन तिनके दो स्त्री, पहिलीसे वंश नहीं भया दूसरीसे पुत्र भये ६ केशव १ माधो २ दोनोजने चिलौलीके उपाध्या भये और सात बालकोंने मिलकर अग्निहोत्र यज्ञ किया तिहिसे यशरामके अग्निहोत्री भये दिउता अमिलगहनीके अवस्थी भये केशवके पुत्र ४ काली १ बन्दो २ मनी मनोज ४ कालीदत्त धतुराके तिवारी भये बन्दो कठौताके वेदपाठी कहाये मनी बरिगवांके तेवारी कहाये ॥

॥ अथ भार्गवगोत्री ॥

भृगुके पुत्र च्यवन तिनसे जमदग्नि तिनके यज्ञेश तिनसे अनघ तिनके यमल तिनसे पुत्र ३ नारायण १ बहोर २ चपल ३ नारायणके पाठक कहाये छोटूपुरके पालके हिबे होरापुरी कहाये पालके पुत्र अङ्ग तिनको झांसीमें राजा राखो ते झांसीमें चतुर्वेद पढ़नेसे झांसीके चौबे कहाये ॥

॥ अथ वसिष्ठगोत्री ॥

वसिष्ठके गोत्रमें बिहार भये तिनके दालाभ्य

तिनके पुत्र कनउजमें बसनेसे कन्नौजके चौबे कहाये तिनका नाम राम कहत रहैं तिनके पुत्र २ दयाल १ गोपाल २ दयाल मौरायेंके चौबे कहाये दयालके पुत्र दो दाम १ राम २ राम डौड़िया खेरेके चौबे भये नन्दनके पुत्र ४ शंभू १ सानू २ प्राग ३ मसन ४ शम्भू ब्रह्मशिलाके दीक्षित भये माल .. हैं दूबे लहरिया कहाये प्रागके सगुनापुरी दूबे भये प्रागके पुत्र ३ निशाल १ प्रधान २ दट्टू ३ प्रधान ज्ञनूपुरके तिवारी भये और सब सगुनापुरी कहाये जिसको सन्देह होय सो हमसे आय कर पूंछि लेय।

॥ अथ कौडिन्य गोत्र ॥

कौडिन्य मुनिके पुत्र नवग्राम सो नवायेंके त्रिपाठी भये।

॥ अथ पराशर गोत्र ॥

परासरके पुत्र २ उपमन्यु १ व्यास २ व्यासके पुत्र शुक तिनके शिष्यपुत्र चमन तिनके सरीफ तिनके सखोस तिनके पङ्कज ते वंशमें प्रकाशित भये तिनके पुत्र ५ ब्योम १ हीरा २ देवख ३ सन्तोषी ४ मणीन्द्र ५ सन्तोषी मणीन्द्र ये स्यमौनी

में बसे ये तवाँई के सुकुल कहाये अब हीरा बसे नागापुरमें ते नागौरी शुक्ल कहाये मणीन्द्रके पुत्र ४ रघुनाथ १ यदुनाथ २ रामनाथ ३ रघुनाथ बैसवारेमें बसे यदुनाथ अन्तर्वेदमें बसे रामनाथ काशीमें बसे रघुनाथके पुत्र ३ त्रिपुरारि १ बल-भद्र २ चन्द्र ३ ये यज्ञ करते भये तेहिते पाराशरी दिक्षित कहाये प्रतिष्ठावाले पारमें बहुत हैं प्रकाशके पुत्र सन्तोषी पाटनिक मिश्र कहाये ।

॥ अथ धनञ्जय गोत्र ॥

शरभङ्गके पुत्र कहोड़ तिनके देव तिनके पाल तिनके सेवक तिनके राजमान्य तिन यज्ञ किया तिनके कुवल ए इहां ते धन अपनी विद्या बलसे सबसे जीतिके लाये तेहिते इनका नाम धनञ्जय भया तहिते वंशके धनञ्जयी कहाये तीनि वेदके पढ़नेसे त्रिपाठी संज्ञा पाई कुवलके पुत्र २ सींधि १ सोन २ सोनेके तिवारी रहे सींधि यज्ञ किया ते अवस्थी भये धनञ्जईके कहाये ।

॥ अथ गौतम गोत्र ॥

गौतमके पुत्र २ सतानन्द एक कृपाचार्य्य २

सतानन्दके पुत्र दयाल तिनके परम तिनके उदात्त तिनके वंशमें तोमद्दा नाम का पुत्र भया तिनके पुत्र शास्त्रधर तिनके पुत्र ४ नागेश १ सुरेश २ परमेश ३ देवक ४ नागेश त्रिपुराके अवस्थी भये सुरेशके पुत्र २ प्रभा १ दीन २ प्रभाके अवस्थी भये दीनके गुलौलीके पाठक भये परमेशके पुत्र २ लाला १ मोहन २ लाला नवदशीके पांडे भये मोहन त्रिपुरारिके शुक्ल भये देवक मत करके दुबे कहाये॥

---o---

अथ मौनस गोत्र।

मुनिको कनराते भये मौन भद्र पिताते मौनगोत्री कहाये सूर्य्यके पुत्र सावरणी तिनके वंशके सावर्णिगोत्री कहाये।

---o---

अथ कौशिक गोत्र।

कौशिकके पुत्र ब्रह्मेश तिनका नाम देव रहै राजा अपनी कन्या व्याह दी तिहिके पुत्र देवेन्द्र तिनके पङ्कज तिनके वान तिनके रन्त तिनके प्रथम तिनकेशूलप्रोत तिनके पुत्र २ कुण्डल १ देवल २ देवलके पुत्र दयाल तिनके धोखे तिनके रावत जिन ऐरावतिको भूतलमें लाये तिससे उसका नाम ऐरा-

पति भआ तिनके वंशमें नन्दन भे तिनके पुत्र ३ हान १ त्राण २ दमन ३ इनमके वंशमें बड़े बड़े प्रतापी भये हान बसे आजमगढ़में त्राण बसे भेला-मऊमें दमन बसे अस्थायलमें।

अथ वत्स गोत्र।

वात्स्यायन मुनिके पुत्र शिकारात जिनके पुत्र शंभु तिनके रत्न तिनके कोक तिनके दुन्दुभि तिनके वंशमें कर्मण भये तिनके पुत्र २ निरञ्जन १ देवनाथ २ निरंजनके पुत्र ४ काशी १ हुलासी २ मौरे ३ देवनाथ ४ तिनके पुत्र ३ खेरे १ प्रद्युम्न २ पटके ३ काशीके पुत्र २ दुलरू १ अधार २ हुलास के पुत्र ३ कल्यान १ जानकी २ खुशाल ३ मौरेके पुत्र २ छोटे १ चेतन २ खेरेके पुत्र ३ तुलसी १ चन्दन २ अजीत ३ प्रद्युम्न के पुत्र २ नन्दू १ शिव-दयाल २ पटके के पुत्र २ गङ्गा १ बुद्धू २ दुलरू दीक्षित फफूँदके कहाये अधार उपाध्या कहाए अधारके पुत्र २ दादू १ सद्दू २ दादूके उपाध्या भये सद्दू केसि मौनीके दुबे भये कल्यान बैजसरके दुबे कहाए जानकीके पुत्र २ सांवले १ मदन २

मदन पांड़े भये सांवल दुबे भये पटनहा खुशालके पुत्र २ हरिदास १ परसू २ हरदास ने हरदासपुर बसाया तिन्हिते हरिदासपुरके पांड़े कहाये प्रयाग मसवानपुर के पांड़े कहाए कोई मसवान पुरसे निकसिके पड़री बसे ते तहांके पांड़े कहाए चेतन के पुत्र २ सर्वस १ चयन २ सर्वस रावतपुरी पांड़े भये चयन ठकुरिया के पांड़े भये छोटे के पुत्र २ बाबू १ सुरई २ बाबू बन्नापुरी पांड़े भए सुरई देव-कली के पांड़े भये तुलसी मधनाके पाठक भए चन्दन के पुत्र सिढ़ू जिनने सिढ़ूपुर बसाया तहां बसेते सिढ़ूपुर के पाठक भए तिनके वंशमें मनसा राम काशी में आयकर बालभट्ट जी से शास्त्र पढ़ा तिनके पुत्र २ जगन्नाथ १ विश्वनाथ जगन्नाथ के पुत्र आनन्दोब्रह्म तिनके पुत्र ३ गोपाल १ शङ्कर २ राजाराम ३ गोपाल के पुत्र ६ गोविन्द १ मकुन्द २ दमोदर ३ पद्मनाथ ४ हरिप्रसाद ५ शङ्कर ६ शंकर के पुत्र १ गय प्रसाद पैदा भये विश्वनाथ के पुत्री २ तिनके व्याह मात्र तो किया फिर अपने अपने पतिन सो कहा कि तुम दूसरा विवाह कर लेव हम काशी जी सेवन करेंगे तैसही भया दूनो

बहिन काशी में तप किया अरु गोदुग्ध को पान करती रहीं और दूसरी चीज नहीं खाईं सब त्याग कर दिया और काशी जी में ही दोनों का शरीर त्याग भया जगन्नाथ जी छहों शास्त्र पढ़ा अध्यायक जी की पदवी इनको काशी जी में मिली पीछे अन्तर्वेदमें राउतपुर के राउत शिष्य भये तो अन्तर्वेद में लाये तत्पश्चात चन्दनलाल चकलेदार मौरायें के शिष्य भए तेरवा ठटिया विंशहा मचेद आदि बहु राजा शिष्य भये चौवे सधारी लाल बलदेव प्रसाद के पिता अरु अपना दोनों भाय शिष्य भये निगोहे में बसे बड़े नामी भये आनन्दी ब्रह्म तक पूरी विद्या बनी रही बड़े प्रतापी भये अरु विश्वनाथ क्षेत्र में सन्यास लिया जहांई शरीर त्याग दिया चन्दन का पुत्र दूसरा मंधना का तिवारी भया अजीत च्योकली के पाठक भये चन्दन को पुत्र मोहन रायपुर का तिवारी भया नंदू के पुत्र शाप तिनके पुत्र २ नन्द १ जात २ शिवदयाल राउतपुरके तिवारी भए बुद्धूके पुत्र हिंगूते हिङ्गोलसे नानमऊ में बसे हिंग्वाल मिश्र कहाये ।

अथ कौत्सगोत्र।

रामके अवस्थी भए दुलरूके पुत्र कलाराम कलाके पुत्र तन्नौ १ स्याम २ तन्नौ कलांकी दुबे कहाये श्याम अपूदके दीक्षित भए रामके पुत्र २ बिन्दा १ बिहारी २ बिहारीके पुत्र २ मथुरा १ हरदयाल २ ई अवस्थी भए मथुराके पुत्र कामजिन काम नामका नगर बसाया हरदयालके पुत्र ऊदे तिन ऊदे पुर बनाया बिहारीके पुत्र अटल तिन आटो बसाई साधुके पुत्र बर तिनने बरौलपुर बसाया झूमरीके बंशके दुबियाने में बसे कोई सुराजपुरमें बसे बिद्वान रहैं कोईको राजाने बसाया रहैं तिलसहरी पास कर्म देखकर।

अथ गर्ग गोत्र।

श्रीकृष्णस्य गुरुः कलानि मुखो रामादि संबर्धे कोबिदाचारपरायणो गुणानिधिर्ज्योतिर्विदां कामदः श्रीगर्गोमुनिपूज्य पूज्यबिमणो रामादिसंसेवितो योगाक्रान्त कलेबरो भुबितलेम् मङ्गलं सर्वदा १ श्रीकृष्णजीके गुरु गर्गाचार्य्य तिनको पुत्र २ गोपेय अरु दयाल २ गोपेय पस्चिम में जायबसे तिनके पुत्र २ गुमान १ सहाय २ गुमानके पुत्र सेवक भये

सुहायके पुत्र लाला तिनके पुत्र मिश्री तिनके पुत्र ४ मन्ना १ लल्ला २ शीतल ३ चतुरी ४ चतुरीका पुत्र चौथसो यमुनातट जाथवसो जिनके पुत्र ४ गौरीदत्त १ अरजू २ शिवरत्न ३ दवन ४ ऐसव चौबे भये चारिवेद पढ़नेसे चौबे कहाये अरु गर्गके पुत्र दयाल जो रहै तिनके पुत्र गिगङ्ग तिनने गिगासों को बसाया अरु उहांई देवीका पूजन किया तिनके पुत्र सुदेव तिनके व्याव्य तिनके बेत तिनने व्याताको बसाया तिनके वंश में सुरषि भये जिनने शौरिष बसाया सुरिषके पुत्र ३ भरत १ नन्दन २ चक्कन ३ भरतके पुत्र सब्बर तिनसौंरहुया नगरी बसाई सब्बरके पुत्र ७ आनन्द १ सप्सुख २ चिन्तामणि ३ गुरुदत्त ४ चन्द्रधर ५ भगवान ६ योधक ७। भगवानके पुत्र २ गणेश १ कुंजी २। सप्सुखके पुत्र २ सिद्धनाथ प्रेमनाथ सिद्धनाथके सर्दानहा मिश्र कहाये प्रेमनाथ पाटनीके मिश्र कहाये आनन्दके पुत्र ३ सङ्कम १ कमल २ भोली ३ कमल बनसेवन किया चिन्तामणिके पुत्र ५ नैमिष १ सातन २ बस्ती ३ सोभा ४ देव ५ नैमिष सब्बरीके अग्निहोत्री कहाये सन्तन सुराजपुरके अवस्थी भेदे-

नचारि वेदक पढ़नेसे चतुर्वेदी कहाए देवके पुत्र ५ पाल १ धीर २ उजागर ३ नारायण ४ जगन्नाथ ५ नारायणके पुत्र गये गङ्गासिवकार्थ गङ्गा निघाट जाय बसे इनका विवाह भया पुत्र ३ माखन १ बदले २ दयाल ३ माखन जहानाबाद बसे बदले औरईया में बसे दयाल ब्रह्मावर्तमें बसे गुरुदत्त बसे त्रिपुरारिने चारिसे धर्मनाशी जात हैं भोजशास्त्र पढ़ाये पाठक भये तिननसे भी धर्म नाशी जात हैं ।

इतने ब्राह्मण विवाह भोजन वेवहारसे त्याग किया चाहिये ।

इतनेन के कुल स्थान देखो कर्म नाम ग्राम देखो तब इनसे सम्बन्ध करो ।

श्लोक,—कुभोजी च हलग्राही गायकं कुदनी तथा तीर्थयाचकाश्च घड़ियाली प्रोहिता स्तत्र भोजिना मुद्राधारी च चक्राङ्कित्रिशूलधारी च मद्यपी चौधरी वेश्यागामी परदाही चौरन्तंतथा विप्रणी धनि कुर्वन्ते मोचहे ग्रामलिच्छनीम् ॥

षटकुलानि पदवी । मिश्र १ शुक्ल २ वाज-

वैद्र ३ पांड़े ४ दीक्षित ५ तिवारी ६ अवस्थी ७ त्रिवेदी ८ दुबे ९ एते षटकुल जानो।

अग्निहोत्री १ पाठक २ एते पञ्चादोरधाकर उत्तम जानो धाकर सोढ़तीन। चौबे १ उपाध्या २ अधूर्ज ३ चौधरी आधाघर धाकर उत्तम चार। सावर्णी १ ठकुरिया २ राउत ३ मैरहा ४।

भारद्वाजी उपाध्या।

उपाध्या	पण्डित	मलिहाबादी	वि २
पाठक	भानुके	चौसाके	वि २
अद्रुर्ज	नारायणपुरी	नरौनेहि	वि २
उपाध्या	मौतिहा	नागपुरी जहानाबादी	
पाठक	अर्गलाके	सगुनापुरी	वि २
अद्रुर्ज	अर्गलासके	सगुनापुरी	वि २

उपमन्यु गोत्र।

उपाध्या	मौठापुरके	बिधुवा	२

शाण्डिल्य गोत्र।

शा	उपाध्या	चिलौलीके	वि २
,,	उपाध्या	लखुअके	वि २
,,	अग्निहोत्री	अमिलागहनीके	वि २

शां	अग्निहोत्री	दिउतावाले	बि २
शां	अवस्थी	अमिलगड़नीके	बि २
शां	अवस्थी	धतुरावाले	बि २
शां	अवस्थी	कठौतावाले	बि २
शां	तेवारी	धतुरावाले	बि २
शां	तेवारी	कठौतावाले	बि २
शां	तेवारी	वनिगाँएकेकलिम	बि २

भार्गव गोत्र ।

भा	पाठक	छोटूपूरी	विश्वा १
भा	दुबे	भार्गवके	विश्वा १

यमदग्नि गोत्र ।

या	चौबे	डोंड़ियाखेरेके	विश्वा ३

विश्वामित्र गोत्र ।

वि	चौबे	झांसीवाले	विश्वा ३

एकावशिष्ठ गोत्र ।

एका	चौबे	कन्नौजके	विश्वा ३
एका	चौबे	मैंरांयेके	विश्वा ३

वशिष्ठ गोत्र।

व	चौबे	डोड़ियाखेरेके	विश्वा ३
व	चौबे	मितिमितिपुरी	,, ३
व	दीक्षित	ब्रह्मशिलाके	,, २
व	दुबे	लुहुरीके	,, २
व	तिवारी	सगुणापुरी	विश्वा २
व	दुबे	सगुणापुरी उत्तरमें हैं	,, २
व	तेवारी	हन्नू के उत्तरमें हैं	,, २

कौशिक गोत्र।

कौ	कौत्सी	राउत्त	विश्वा ०
कौ	अग्निहोत्री	खिउरावाले	,,

पाराशर गोत्र।

पा	शुक्ल	सिमौनीके	विश्वा २
पा	शुक्ल	नागापुरी	,, २
पा	दुबे	नागापुरी	,, २
पा	दीक्षित	सिमौनीके	,, २
पा	मिश्र	पटनहा	,, २

वत्स गोत्र ।

वत्स	मैरथा	फर्रूदवाले	बिश्वा	०
व	उपाध्या	देवकलीके	,,	२
व	दुबे	देवसरिहा	,,	५
व	दुबे	पटनहा	,,	५
व	पाँड़े	नौगाँयेंके	,,	४
व	पांड़े	पड़रीके	,,	४
व	पांड़े	रावतपुरके	,,	४
व	दीक्षित	हयबैया	,,	०
व	दुबे	समौनिहा	,,	५
व	दुबे	ख्योलिहाके	,,	५
व	पांड़े	भद्दरसौके	,,	४
व	पांड़े	हरिदासपुरके	,,	४
व	पांडे	ठकुरिया	,,	४
व	पांडे	देवकलीके	,,	४
व	पांडे	नगउपडरीके	,,	४
व	पाठक	सेढ़ूपुरके	,,	५
व	तेवारी	देवकलीकेठकुरिया	,,	२
व	तेवारी	सापेके	,,	२
व	तेवारी	रावतपुरके	,,	२

ब	मिश्र	हिंगील नाना मऊकी	,,	२
ब	पांडे	नगऊमेवन्नाकी	,,	४
ब	पाठक	मन्धनाके	,,	७
ब	तेवारी	मन्धनाकी	,,	८
ब	तेवारी	रायपुरके	,,	२
ब	तेवारी	आंकिनीके	,,	२
ब	मिश्र	वत् शरिया पुरानी सियागंजके		०

धनञ्जय गोत्र ।

धनंजयी	तेवारी	विश्वा	४
धनंजयी	अवस्थी	,,	२

गौतम गोत्र ।

गौ	अवस्थी	त्रिपुरारिकी	विश्वा	४
गौ	पांडे	नवदशी	,,	२
गौ	अवस्थी	यज्ञकी	,,	४
गौ	दुवे	मतिवारकी	,,	२
गौ	पांडे	गुलौलीके	,,	२
गौ	अवस्थी	नेवलपुरी	,,	४
गौ	शुक्ल	त्रिपुरारिकी	,,	२

मौनस गोत्र ।

मौ	दुबे	मातक्षरकी	बिस्वा २

सावर्णि गोत्र ।

सा	इटाये वाले	घर बहुत हैं	बिस्वा ०

गर्ग गोत्र ।

गर्ग	मिश्र	सद्दनिहा	बिस्वा	२
ग	चौबे	डौंडियाखेरेकी	,,	३
ग	अग्निहोत्री	संवरीकी	,,	२
ग	तेवारी	सांपेकी	,,	२
ग	पाठक	छीटूपुरकी	,,	४
ग	पांडे	पचोरकी	,,	२
ग	पांडे	पडरीकी	,,	२
ग	दुबे	सद्दनिहा	,,	२
ग	पाठक	त्रिपुरारिकी	,,	५
ग	मिश्र	पटनहा	,,	८
ग	चौबे	पिहानीकी	,,	३
ग	चौबे	गर्गैया	,,	५
ग	अवस्थी	सुराजपुरकी	,,	२

ग	उपाध्या	देवकलीके	बिश्वा १
ग	पाठक	आमताराके	,, २
ग	पांडेवका	कन्नौजके	,, ५
ग	दुबे	उन्नांवके	,, १
ग	दुबे	बिउलिहा	,, २

कवरस्थी गोत्र ।

क	दुबे	सुराजपुरके	बिश्वा २
क	दुबे	मझाएके	,, ७

इतने गोत्रोंका हाल नहीं मालूम था गोत्र कुल स्थान प्रसिद्ध हैं सो आगे वर्णन करते हैं । दीक्षित क्षतिम् बने शाहाबादवाले कोडरीवाले गरहावाले दुबे ठाठविलार दुबे लहुरीके दुबे इछवरीके दुबे बिहार वाले भारद्वाज यज्ञके भारद्वाज यज्ञप्रवरी गलहथीके उपमन्यु गिगासीं लखनजके भारद्वाज सौनिहा जहानाबादी नागापुरी हैं देवकलीके नरबलवाले जानव इतने घरमें गोत्र कुल स्थान प्रसिद्ध हैं । बेपत्तेके कन्नौजिया । दुकन्दहा छत्री तेवारी छोटे गावके तेवारी पुरके दुकन्दहा कन्या व्याहे

ब्राह्मणके पुत्र चचौके घर तीनोमें काश्यप तेवारी गुनरोके वत्स,पांडे भदरसीके वत्स पांडे नौगांवके येतीनी सरवरिया ब्राह्मण हैं कपिहुलिया लङ्काडाही गुदवान गोत्र उपमन्यु हैं भदरसीके वा महौलीके यह घर सब घरमें मिले हैं।

———o———

अथ षटकुल महतुर गोइयांका व्योरा।

यह मेल जिस समय में कन्नोजियोंने प्रतिष्ठा बांधी है उसी समयमें लिखा हैं यही सम्प्रदा बराबरसे चली आती हैं पहिला महतुर दूसरा गोहियां तीसरा पञ्चादरि जानो पहिला महतुर में उत्तम मध्यम निकृष्ट हैं दूसरा गोहीयां में भी उत्तम मध्यम निकृष्ट हैं तीसरा पञ्चादरि में उत्तम मध्यम निकृष्ट हैं पञ्चादरि वाले अपनी कन्या उत्तम घर में व्याह करने से उत्तम हैं और गोइयां महतुर लडका लडकीके परस्पर घराने में व्याह करनेसे उत्तम हैं जो ज्ञानवान हैं वेतो समुझ लेते होङ्गे अज्ञान नही समझते होङ्गे सो व्योरा अज्ञान पुरुषोंके समुझने के लिये लिखा हैं कुल तथा अस्थान लिखा हैं

गोत्र असामी विस्वा नहीं लिखा काहेसे कि जिस्का जिस घराने का मेल होयगा उहां करैगा यह समुझना चाहिये यहांसे नीचे लिखा हैं ।:—

अथ महतुर घर उत्तम व्योहार

दक्षिणा ॥५०१॥

वाजपेई	ऊचे लखनऊकी	तेवारी	चन्दुकी
मिश्र	माझगांवकी	मिश्र	परसूकी
पांडे	खोरिकी	शुक्ल	वालाकी
शुक्लगभिल	फतूहाबादी	अवस्थी	माधूकी
वाजपेई	हीराकी	दीक्षित	श्रीकान्तकी

अथ महतुरघर मध्यम व्योहार

दक्षिणा ॥४५१॥

पांडे	गिगासोंकी	अवस्थी	माधुकी
वाजपेई	ऊचे लखनऊकी	अवस्थी	प्रभाकरकी
वाजपेई	वीसाकी	मिश्र	आंकिनकी
मिश्र	माझगांवकी	मिश्र	कन्नौजकी
मिश्र	वीरकी	शुक्ल	वालाकी
वाजपेई	हीराकी	पांडे	खोरिकी

दीक्षित औंकान्तकी	मिश्र परसूकी
शुक्लनमेल फलूहाबादी	तेवारी चत्तूकी
मिश्र सोठियायेंकी	वाजपेई मनिराम खालेकी
दीक्षित कांगूकी	शुक्ल छंगेकी

अथ महतुरघर निकृष्ट व्योहार दक्षिणा ॥४०१॥

दीक्षित बीरेश्वरकी	शुक्ल पैकूक
वाजपेई ऊंचे लखनऊकी	शुक्ल कैसोकी
वाजपेई वटेश्वरकी	शुक्लनमेल डोमनपुरकी
मिश्र आकिलकी	दुबे घर वासकी
मिश्र सोठियायेंकी	तेवारी गोबर्द्धनकी
मिश्र हेमकारकी	मिश्र कन्नौजकी
त्रिवेदी हरीकी	मिश्र बीरबनवारीकी

इतने घर महतुर उत्तम मध्यम निकृष्ट जानो

अब गोहिया घर उत्तम मध्यम निकृष्ट

व्योहार का वर्णन।

अथ गोहिया घर उत्तम व्योहार दक्षिणा ॥२५१॥

वाजपेई धन्नीकी	मिश्र गोपीनाथधोबिहा
वाजपेई ताराकी	शुक्ल न्यायबागीसकी

शुक्ल	मोदलकी	तेवारी	दमाकी
पांडे	लखनऊकी	शुक्ल	नभेलकी
वाजपेई	शिवसमकी	दीक्षित	घाबूकी
मिश्र	कन्नौजकी	वाजपेई	देवशर्मकी
अवस्थी	बड़ेकी	पांडेखोरि	डोडरकी

अथ गोछया घर मध्यम व्योहार

दक्षिणा। ॥२०१॥

वाचपेई	पीथाकी	शुक्ल	नभेल
मिश्र	वैजेगावकी	शुक्ल	मोदत्तकी
मिश्र	कन्नौजकी	अवस्थी	गोपालकी
मिश्र	गोपीनाथी	दीक्षित	उमादत्तकी
दुबे	कपिलागडोवा	दीक्षित	बबुवाके
तेवारी	गोपालकी	वाजपेई	मथुराके
वाजपेई	काशीराम	मिश्र	बदरकाकी
वाजपेई	मनीराम	शुक्ल	मिश्रा प्रजापति

अथ गोछिया घर निकृष्ट व्योहार

दक्षिणा। ॥२५१॥

मिश्र	पासी खेरेके	मिश्र	लखकरकी
मिश्र	गोपीकी	शुक्ल	दुर्गादासकी

शुक्ल	मभेलके	दीक्षित	अंटेरिके
वाजपेई	निर्मलके	शुक्ल	हरीके
त्रिवेदी	प्रयागके	त्रिवेदी	रघुनाथके
वाजपेई	गोपीके	शुक्ल	तिलकके
तिवारी	घाघके	शुक्ल	बनवारीके

इतने गोत्रीया घर उत्तम मध्यम निकृष्ट जानो।

---o---

श्रीषटकुल वा पञ्चादरि जो इस पुस्तकमें जैसीपाइ वैसीही छपाई ब्राह्मण सर्व ईश्वर हैं जउसे देखो सब एकही हैं।

---o---

चौपाई।

यह पुस्तक छापी मन लाय। कृपा करो षट्-कुल सब आय॥ कान्यकुब्ज की प्रगट बड़ाई। अब-नहि भूलो कीरति भाई॥ पढ़व लिखव सब दियो मिटाय। यह सब मिलि समझो मन लाय॥ पढ़ि लिखि जग होत बड़ाई। उद्यम यत्न सदा चलि आई॥ भाइन मैं मन राखत मानू। द्रव्य यत्न कर घर में आनू॥ तब हीं मान रहैगो भाई। इस को सब मिलि करो उपाई॥ कमला जी को करो प्रशंसा। कलि-

युग में सब के मन हिंसा॥ पाणिग्रहण अस उत्तम काजा। सप्तम नवम एकादश साजा॥ उत्तम मध्यम निकृष्ट कराई। यह सम्प्रदा युगल चलि आई॥ तेहि ते पाणिग्रहण नहि हेतू। सब हि देखिये मन परतीतू॥ यह अपराध बड़ो है भारी। तेहि ते सब दुख पावत भारी॥ यह सम्बन्ध करो अब ऐसे। परस्पर रारि करो नहि जैसे॥ जेहिका मध्यम लोग बतावै। यथा उचित कर तासो लावै॥ सब को स्तुति औ विनती कीजे। यह सम्प्रदा समुझि कै लीजे॥

कवित्त।

लखणा पुरी मध्य रामभद्र प्रीतिकर बाजपेई सुने हैं। आजलाल उज्जाल फतूँहा उध्य जाने हैं॥ सादोसि दीक्षित औकान्तके सार भूत चन्द्रसे सुकुल चन्द्रवाणा में बखाने हैं॥ सिवानन्द पांड़े वर उर्वीधर मिश्र कहे मांझगांव खोरिके॥ एई हैं कुलीन गंगा औ गिगासों और सब छल साने हैं॥ १॥

कवित्त।

पांड़े पुनीत गंगाजलसे गिगासों वाले खोरिवाले खोरि थापेसे घरके॥ तिलकके तेवारी चतुराले

सुगन्धवाले अवस्थी साधू प्रभाकरके ॥ श्रीमा विश्वा वीसके वटेश्वरके हौरावाले हीरासे उदित वाजपेई प्रीत करके ॥ दीक्षित अंटेरवाले बाबूवाले जाहिर है विदित श्रीकान्तवाले दीक्षित मिश्र धोबिहा सब हरिके ॥ प्रगट त्रिवेदी हरौवाले मनिकण्ठवाले दुबे घर वासके ॥ निवास आक्षोदरिके आंजिनके सिरताज सुठियाये वाले रंभ गैंया साभ मिश्र मभ गैया ऊचे घरके ॥ गोपीनाथ गरुवे गरभोले हैं प्रसिद्ध परसू सूरके उदित देख मिश्र हिम वारके ॥

कवित्त।

मन जाके मैं जो उद्योग उठे ॥ सो तुरन्त करै कछु नाहि बिचारे। अहैं धनहीन भले नरजो। तिनको अब त्याग कुटम्ब बिचारै। भये धनवान वही नरजो ॥ तो करै सब ताहि वड़ो अपनारो। नहीं कछु अंकुस है उन में ॥ गुण होय तो अंकुस सिद्ध विचारो ॥

दोहा।

विद्या ज्ञान शरीरमे ॥ बसत सदा जेहि अङ्ग धर्मबद्धिताके बड़े ॥ यह अंकुस को मर्म ॥

चौपाई।

द्विजवर्य्य षटाकुलसों बिनती। सुनिके अतिको जो बिचार मती ॥ करिये सम्बन्ध परस्पर में। तब

कीर्त्ति बढ़ै अति भूतलमें॥ करिये सुतकार्य्य सदा समर्में। अकुलेनन दैनवारंतेहि में॥ जो करो सुत मध्यम कार्य्य हजो। तेहि में जु सहस्र प्रदक्षिणा जो॥ जो निकृष्ट करो सुतकार्य्य अहो। तेहि में पञ्चसहस्र दाहूण हो॥ यह नीति विचार अहैं जुभलो। जुकरैं निखि के द्विज वर्यथलो। यहि कारज में तब कीर्ति बढ़ै। कुल होय प्रकाशित बुद्धि बढ़ै। करि हैं जु विचार अहम्बन्धू। करि हैं पाणिग्रहण सम्बन्धू॥ मध्यम सम्बन्ध किये सो सुनो। कुलभ्रष्ट नहीं कछु लाभ घनो। तेहि त विनती सब भाइन सों। न करो सम्बन्ध निकृष्टन सों। यहिमे रहि हैं सबको जु पती। करि हैं जु कृपा सब बंसपती॥

कुण्डलिया। कान्यकुब्ज दर्पण सकललिख कीन्हों तैयार। हुका शुक्ल जोको भयो कीन्हों याहि प्रचार॥ कीन्हों याहि प्रचार सकल षटकुलके हेता। जो देखै करि प्रीति ताहि अतिशय सुखदेता॥ कह लक्ष्मीधर मिश्र भई पुस्तक बहु अर्पण। यह अतिशय गुणखानि विदित षटकुल में दर्पण॥

दोहा। ग्राम मुरादाबाद में मिश्र सिव बकस जान तिनके सुत गङ्गा वकस अति सुशील

बुद्धिमान। बसत मुरादाबाद मे कीरति करौं बखान विष्णु खैर चाल श्राथ पांडेन कीन्हीं मान। तिनकी सुत दुर्गाप्रसाद मुरली धर। तस्यात्मज मोहि जान शिवशङ्कर गौरीशङ्कर लक्ष्मीधर मम नाम हैं। पदवी मिश्र बखान। षटकुल हित यह वाक्य कहि सुनिये चित्त लगाय। श्रति विचित्र वंशावली हैं सब को सुखदाय॥

सोरठा।

हैं विचित्र यह शास्त्र कान्यकुब्ज को अमिय रस करिये याको पान सब को होवे विमल यश॥

श्लोक।

चिकित्सया सर्वजनान्महीतले सुखेप्रणा यप्रणी-नाय च।र्थकान्। प्रीतिन्विधाय प्रमथाधियो मयो सुखादरां शुक्लकुलेर राजसः॥१॥ पश्चात् शु, शोच।शुम-वैसयाकृतं काव्यं हरिप्रीतिकरं मुहृत्सुखम्। गतं वयोमे गृहकृत्यसाधने करोमि किं रोगयुतोऽस्मि-साम्प्रतम्॥२॥ महाद्विना देव सहोदरेण प्रोक्तः कुरु ष्वाद्यंकुलब्रतानाम्। तां कान्यकुब्जद्विजसम्भवानां वंशावलीकीर्त्तिविवर्द्धनाय॥ ३॥ वंशावल्यः संति-ब्रह्मोरहेषु ब्रह्मरायानाम्नान् शुद्धानामाद्याः जानासि त्वं सर्व वंशोद्भवानां नामानि प्राधान्यतः कीर्तयासु

देहेऽनित्यस्याग्निरोगो न वार्यं को जानाति प्रायशः ।
मत्तदेमाम् चक्रं शम्भुं तत्समीपे समीक्ष्य श्रुत्वा
श्रद्धां प्राप्लिखं सज्जनार्थम् ॥५॥ कान्ते मांसोयुक्तमोक्षो-
विरागः श्रुत्वागीतां विष्णुनामानि तद्वत् वाण्यधार
शोयवासं प्रचक्रे मासिकां त्वक्त्वीमलोमास्थिशेषः ॥६॥
भाद्रेशुक्ले द्वितिथौ भानुवारे मध्याह्ने यो वहति तस्य
योगे पूर्वाषाढे चाभि जिन्ये मुहूर्ते चोत्मिथ्युतध मन्दिरे
ब्रह्ममूर्तिः ॥७॥ चन्द्रवाण नवभूमिवत्सरे सोऽत्यज-
द्, यमुतं कलिवरम् नाभिवंशनरभूषणांवरम्, लोकभूमि
जयदेवशाक्तिम् ॥८॥ सत्यादिना दुःखजगत् प्रक्षिप्य
मोहंतथा ज्ञानबलेन सद्यः । सोऽयं गतः कृष्णपदः
प्रसाद्यं निधाय मोऽस्माकमुखचानुगामी ॥९॥ याजात-
नाभारवहान हृष्ट्वा नष्टे श्रुत्वा देहगतान लोके ।
भविष्यति काप्यकरोमि नित्यं शोचामिचाद्यनिज-
कर्मेव ।१०॥ पितामृतो मे जननी मृतासा पुत्रो-
मृतोज्येष्ठतरो न दुःखम । बभूव तद्बन्धुवियोग वार्तां
जानाति नित्यं हृदयास्तनुमे ॥११॥

इति श्रीसुक्लभट्ट कालिकाप्रसाद प्रेरित सुक्ल
सूर्यप्रसादात्मज सुक्ल जयदेव विरचितायां वंश-
प्रदीपिकायां सम्पूर्णं शुभमस्तु ॥